



दिव्यांका

.....दिव्य प्रकृति की गोद में

वार्षिक पत्रिका

2023-24

जिला कांगड़ा (हि. प्र.)



Komal 1st in



**Divyanshu Sharma
1st in B.Com.**



**Avivivek
1st in B.Com. III**



**Anjali
1st in B.A. I**



**Anita Bhardwaj
1st in B.A.**



**Jyoti
Best Athlete**



**Munish Rana
Road Safety**



**Sahil Kumar
Best Student
Best Athlete of the Year**



**Varun
Best Volunteer (NSS)**



**Diksha
Best Volunteer(NSS)**



**Shuvani Thakur
CSCA President**



Orientation Program for New Students



Say No to Drugs



Let us bid adieu for something New (Farewell)



**Let Us Welcome the Chief Guest
Annual Prize Distribution Function**



Let us Rock the World



Ready to Rock



Learning Leadership with Dr. Gopal (Regional Seminar)



College Students Central Association

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका “दिव्यांका” का विवरण

1. प्रकाशन स्थान : राजकीय महाविद्यालय, मझीण
2. प्रकाशन की आवर्तिता : वार्षिक
3. प्रकाशक का नाम : डॉ. चंदन भारद्वाज
4. राष्ट्रीयता : भारतीय
5. पता : प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय मझीण
6. मुख्य सम्पादक का नाम : प्रो. बलजीत जम्वाल
7. राष्ट्रीयता : भारतीय
8. पता : राजकीय महाविद्यालय, मझीण
9. मुद्रण का स्थान : कमल स्टेशनरी मार्ट, ढलियारा
10. स्वामित्व : राजकीय महाविद्यालय, मझीण

मैं डॉ. चंदन भारद्वाज, एतद्द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।


हस्ताक्षरित

नोट:- रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक मण्डल या मुद्रक उनसे सहमत ही हो।

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)



Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001

Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

Message

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine.

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind

(Dr. Amarjeet K. Sharma)



प्राचार्य संदेश

प्रिय छात्र, संकाय सदस्य और राजकीय महाविद्यालय मझीण के मित्रो,

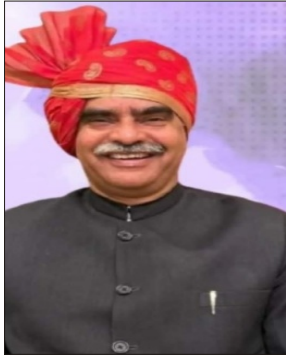
हमारे हरे-भरे पर्वतों की गोद में बसे शांत और सुंदर राजकीय महाविद्यालय मझीण की वार्षिक पत्रिका के इस विशेष संस्करण में आपका स्वागत है। यह पत्रिका हमारे कॉलेज के जीवन की झलक प्रस्तुत करती है, जिसमें हमारे छात्रों और संकाय सदस्यों की कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और उपलब्धियाँ समाहित हैं। हमारा कॉलेज केवल एक शैक्षणिक संस्थान ही नहीं है, बल्कि एक परिवार है जहाँ हर छात्र और संकाय सदस्यों को अपनी प्रतिभा और क्षमताओं का पूर्ण विकास करने का अवसर मिलता है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता हमें शांति और प्रेरणा दोनों प्रदान करती है, जिससे हम हर दिन कुछ नया सीखने और उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित होते हैं। इस वर्ष हमारे छात्रों ने शैक्षणिक, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों में असाधारण प्रदर्शन किया है। उनकी इन उपलब्धियों के पीछे हमारे संकाय सदस्यों का निस्स्वार्थ मार्गदर्शन और समर्पण है। मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया।

आइए ! हम सभी मिलकर इस अद्वितीय यात्रा को जारी रखें और राजकीय महाविद्यालय मझीण को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुंचाए। आपके समर्थन और सहभागिता के लिए धन्यवाद

डॉ. चंदन भारद्वाज

प्राचार्य

राजकीय महाविद्यालय मझीण



संदेश

राजकीय महाविद्यालय मझीण के प्यारे बच्चों,

अपार स्नेह व आशीर्वाद ।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की पत्रिका 'दिव्यांका' का नया अंक आपके समक्ष है । महाविद्यालय पत्रिका नवयुवाओं को अपनी सृजनशील प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रस्तुत करती है । सृजन एक सहज प्रक्रिया नहीं है कि कलम उठाई और रचना शुरू । वास्तव में सृजन एक पीड़ा है, संघर्ष है, चुनौती है । इस पीड़ा को सहने की क्षमता, संघर्ष का सामना करने का धैर्य और चुनौती को स्वीकारने की शक्ति चरित्र के उत्कर्ष से ही संभव है । विद्यार्थियों से मेरी अपेक्षा है कि शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करते हुए अपनी संस्था से निकलें । आप देश का भविष्य हो । जिस शिक्षा से हम अपना चरित्र-गठन कर सकें, विचारों में सामंजस्य कर सकें, वही सच्चे अर्थों में शिक्षा कहलाने योग्य है । ऐसे शिक्षित विद्यार्थी ही अपनी रचनात्मक क्षमता से पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ाने में समर्थ हैं । मैं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. चंदन भारद्वाज, सभी संकाय सदस्यों को कड़ी मेहनत के लिए बधाई देता हूँ । मैं सभी विद्यार्थियों को पत्रिका के सफल प्रकाशन व उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित


संजय रतन

विधायक, ज्वालाजी



Editorial

The college magazine is a document that reflects the inner voice of the students. The magazine society endeavours to provide a platform to students to hone their writing, editorial skills and most importantly to express their aspirations and dreams and the challenges that they encounter while manoeuvring through the labyrinths of everyday existence. The magazine provides opportunity for the students to express themselves in various ways. The magazine is more than a publication it is a reflection of collective aspirations A Melody of diverse perspective and an ode to the power of unity. The magazine is a tool for reflection and is a way for students and faculty to come together in celebrating the institution rich legacy.

Prof. Baljeet Jamwal

Chief Editor

ज्वालामुखी मंदिर : एक दिव्य शक्तिपीठ

जले ज्वाला स्थले ज्वाला, ज्वाला आकाशमण्डले । त्रैलोक्य व्यापिनी भयः ज्वाला, तस्मै श्री ज्वालामुखी देव्यै नमः ॥

ज्वालादेवी मंदिर भारत में दिव्य शक्ति को समर्पित, अत्यधिक प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक है। कांगड़ा घाटी की शिवालिक श्रृंखला कालीधार की गोद में बसा यह मंदिर भारत में हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के ज्वालामुखी में स्थित है। 51 शक्तिपीठों में से एक इस सुप्रसिद्ध शक्तिपीठ की यह विशेषता है कि यहां पर प्रतिमा की पूजा नहीं होती बल्कि यह विश्व में पहला ऐसा मंदिर है जहां ज्योति स्वरूप में ही आदिशक्ति की पूजा होती है। मंदिर में माँ की दिव्य, अलौकिक नौ अखंड ज्योतियाँ बिना तेल-घी के सदियों से निरंतर प्रज्वलित हैं। इन ज्योतियों में न ताप है और न ही धुआं है।

शिवपुराण के अनुसार जलंधर राक्षस की मृत्यु उसकी पत्नी वृंदा के प्रतिव्रता धर्म के नष्ट होने पर ही संभव थी। सभी देवगण भगवान शिव की शरण में गए ताकि राक्षसों के अत्याचारों से मुक्ति प्राप्त हो। भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप धारण का वृंदा का स्तीव्र नष्ट कर दिया जिससे शिव ने उसे अपने त्रिशूल से मार गिराया। ऐसा कहा जाता है कि उस राक्षस का विशाल शरीर त्रिगर्त क्षेत्र में गिरा था। सिर का वह भाग जो कान था, वह कांगड़ा में गिरा। इसी कारण इस क्षेत्र को कांगड़ा और मुख ज्वालाजी में गिरा, जहां से ज्वाला प्रकट हुई जिस कारण ज्वालामुखी नाम पड़ा। तंत्र चूड़ामणि नामक ग्रंथ से इस बात की पुष्टि होती है कि, “ज्वालामुख्या महाजिह्वा देव उन्मक्त भैरव अर्थात् ज्वालामुखी में देवी सती की महाजिह्वा है।

ज्वाला माँ की नौ ज्योतियों की महिमा :- ज्वालादेवी मंदिर में नौ अखंड ज्योतियाँ निरंतर जलती आ रही हैं। मुख्य द्वार के सामने कक्ष में प्रवेश करते ही एक मुख्य ज्योति है जो महाकाली की ज्योति मानी जाती है। यह ज्योति चांदी में मढ़े हुए प्रकोष्ठ में प्रज्वलित है इसी ज्योति के साथ माँ अन्नपूर्णा तथा इसके दूसरी ओर शत्रुओं का विनाश करने वाली माँ चंडिका तथा व्याधिनाशिनी माँ भवानी का वास है। पांचवी ज्योति माँ विध्यवासिनी की है। इसके अतिरिक्त धन-धान्य की प्रतीक माँ लक्ष्मी, विद्यादायिनी माँ सरस्वती, हिंगलाज और माँ अंजना ज्योति रूप में विराजमान है। पाण्डवों ने इस मंदिर का निर्माण करवाया जैसे कि भजन से विदित है -

“पंजे पंजे पाण्डवां ने भवन बनाया, अर्जुन चंवर झुलाया।” हवन एवं खप्पर पूजन की माँ ज्वाला के मंदिर में विशेष मान्यता है। माना जाता है कि यहाँ किया गया एक हवन 10,000 यज्ञों के बराबर फलदायी होता है। शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिए तथा बुरी शक्तियों को दूर भगाने के लिए तंत्र-मंत्र से संपन्न होने वाली माँ की गुप्त खप्पर पूजा भी की जाती है जिसमें 64 योगिनियों की पूजा दिन में एक बार ही तंत्रोक्त विधि से की जाती है।

ज्वालाजी मंदिर की आरतियाँ :- मंदिर कमेटी की ओर से प्रतिदिन पांच बार आरती का आयोजन किया जाता है। आरती में ढोलक, छैने, नगाड़े, घडियाल, मंजीरे, चिमटे आदि वाद्य यंत्र बजाए जाते हैं। पांच आरतियों में से चार आरतियाँ गुप्त होती हैं। जिनमें मंदिर कमेटी के पुजारी ही गर्भगृह में प्रवेश कर सकते हैं। आरती के दौरान मंदिर के प्रांगण में भक्तों का तांता लगा रहता है और वे माँ के मंदिर के कपाट खुलने का जयकारों के साथ बेसब्री से इंतजार करते हैं। पांच आरतियों में श्रृंगार आरती, मंगल आरती, भोग आरती, सांयकालीन आरती, शयन आरती प्रमुख है।

गोरख डिब्बी :- गुरु गोरखनाथ पूर्वी बंगाल में जन्में 8वीं सदी के नाथ सम्प्रदाय के गुरु मच्छेन्द्र नाथ के शिष्य थे। इन्होंने देवी के मंदिर में योगिनी साधना कर प्राणायाम, आसन, मुद्रा व नादानुसंधान व इसके आसनों द्वारा हठ योग का प्रचार किया। भारत में भी गोरखनाथ इसी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। संभवतः नाथ संप्रदाय से जुड़े योगी कांगड़ा जनपद में आए हों और यह स्थान योगिनी पीठ होने के कारण उन्होंने यहाँ तप करके माँ ज्वाला को प्रसन्न किया हो। योगचिन्तामणि, हठयोग प्रदीपिका आदि पुस्तकों में इसके प्रमाण मिलते हैं। ज्वालाजी मंदिर में गोरख डिब्बी में गैस पानी के कुण्ड में से बुलबुलों के रूप में बाहर निकलती है व ऐसा आभास होता है कि पानी उबल रहा हो किन्तु गैस जल से हल्की होने के कारण ऊपर आ जाती है और इसे गोरख डिब्बी के नाथ सम्प्रदाय साधु धूप आदि जला कर इसमें क्षणभर के लिए जलती भभक के रूप में इसकी विचित्रता बताते हैं।

ज्वालाजी मंदिर प्रकृति की एक ऐसी कृति है जहां भगवती देवी एक मूर्तिरूप न होकर प्रत्यक्ष ज्वाला रूप में विद्यमान स्वयं देदीप्यमान है। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कांगड़ा जनपद जहाँ यह मंदिर विद्यमान है, आक्रमणकारियों का शिकार भी हुआ पर आस्था ने बारम्बार इसका पुर्ननिर्माण किया। जहाँ मुस्लिम शासकों ने इस मंदिर को ध्वस्त किया, वहीं ब्रिटिश काल में महाराजा रणजीत सिंह और उसके वंशजों ने इसे संवारा और भव्य रूप दिया। भक्तों की अपार श्रद्धा व दानशीलता ने आज इसे इस भव्यता पर पहुँचाया है कि भारतीय ही नहीं, विदेशी भी इसकी भव्यता के दर्शन के लिए लालायित रहते हैं।

**डॉ. सारिका
हिंदी विभाग**

दिव्यांका

2023-24

हिंदी अनुभाग

प्राध्यापिका संपादक
डॉ. सारिका



विद्यार्थी संपादक
साक्षी बी.ए. III



विषय सूची

क्रमांक	विषय	लेखिक/लेखिका
1.	जीवन	प्रियंका, बी.ए. द्वितीय वर्ष - 12221
2.	पर्यावरण बचाएं	शिवानी ठाकुर, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12101
3.	प्रकृति	बिंदू, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12147
4.	महकती हुई बेटियां	अर्चना, बी.ए. द्वितीय वर्ष - 12205
5.	समय प्रबंधन	नेंसी, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12317
6.	मैं आज के युग की नारी	रुचि राणा, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12102
7.	बेटी	मुनीष राणा, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12116
8.	आजादी	रिया, बी.ए. द्वितीय वर्ष - 12220
9.	हिंदी भाषा	रुचि कुमारी, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12109
10.	सोच और समझ में अन्तर	काजल, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12316
11.	हम वो परिंदे नहीं, जो उड़ना छोड़ देंगे	श्वेता, बी.ए. द्वितीय वर्ष - 12222
12.	कुछ करना है तो हटकर चलो	निकिता, बी.ए. द्वितीय वर्ष - 12224
13.	सड़क सुरक्षा	निशा देवी, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12122
14.	हिमालय की गोद में धौलाधार के आंचल मे बसा पालमपुर	कविता, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12128
15.	बचपन	मीनाक्षी, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12315
16.	माँ	विशाखा, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12337
17.	चटपटे-चुटकुले	दिया, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12305
18.	सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव	ज्योति राणा, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12113
19.	अनुच्छेद 22	रोहित पंत, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12148
20.	नारी	अंजली, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12116
21.	मझीण कॉलेज सबसे प्यारा	खुशी चौधरी, बी.ए. प्रथम वर्ष - 12301
22.	मेरी माँ	साक्षी, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12135
23.	शिक्षा	प्रिया, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12117
24.	शिक्षक	शिवानी, बी.ए. तृतीय वर्ष - 12108

जीवन

जीवन ईश्वर का उपहार है, खुशियों का सार है ।
 जीवन दुखों का धरौंदा नहीं, सुखों का अंबार है।
 जीवन अंधकार नहीं, अंधकार में रोशनी की तलाश है ।
 जीवन असफलता नहीं, सफलता का प्रयास है ।
 जीवन दुश्मनी नहीं, दोस्ती का नाम है ।
 जीवन बड़ा बनना नहीं, बड़ों का सम्मान है ।
 जीवन नीरसता नहीं, रसों की बहार है ।
 जीवन कोरा कागज है, जिसे हमें संवारना है ।
 जीवन एक सपना है, जिसे सच बनाना है ।
 जीवन एक सागर है, जिसे पार लगाना है ।
 जीवन कुछ भी नहीं, बस जीने का नाम है ।
 जीवन तो ईश्वर का उपहार है, खुशियों का सार है ।

प्रियंका

बी.ए. द्वितीय वर्ष

पर्यावरण बचाएं

डरी सहमी-सी सोच रही, एक छोटी सी कली फूल की,
 क्या मैं भी निशानी एक बनूंगी, इंसान की हर भूल की ।
 मेरी किस्मत में भी क्या एक फूल बनना नहीं लिखा है,
 दुष्ट इस मानव ने क्या अपना लक्ष्य यही चुना है ।
 चुप बैठा एक पेड़ दूर से, उस दुखी कली को देख रहा था,
 कैसे उसके डर को मिटाएं, कुछ उपाय यह सोच रहा था ।
 फिर बोला वह दृढ़ मन करके, मेरे साथ भी यही किया है,
 अपने ही बस स्वार्थ साधने, मेरा भी जीवन यहीं लिया है ।
 दोनो के मन की बातों को, जब जाते-जाते सुना पवन ने,
 बोली कष्ट दिया है हमको, इस नादान बर्बाद एक लगन ने ।
 फैला के मुझमें भी प्रदूषण, खुद की सांस ही कर ली दूषित,
 अब कौन करे इन नादानों को? इनकी दुष्ट करनी से सूचित
 । इन तीनों की बातों को सुन, शांत नदी में भी हुई हलचल,
 इनकी करनी का सबक मिलेगा, इनको आज नहीं तो कल ।
 जितना दूषित करके हमें, इस मानव ने हमें सताया,
 एक दिन यह वैसे ही तड़पेगा, यह मैंने तुमको आज बताया ।
 माफी मांग इन सब से हम अब, अपना पर्यावरण बचाएं,
 खुद की सरल जिंदगी जी के, इन रुष्टों को आज मनाएं ।

शिवानी

बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रकृति

कितना सुंदर अपना संसार, ऋतुओं की है यहां बहार,
 मिलजुल कर सब रहते हैं, प्रकृति इसे हम कहते हैं ।
 सब जगह हरियाली छायी, सूरज का वरदान है,
 हम रहते हैं प्रकृति में और, यही हमारी शान है ।
 प्रकृति से हमें मिलता है सब कुछ, चाहे अन्न,
 हवा या जल हो, हमें बचाती हमें खिलाती,
 प्रकृति पर ही सब अर्पण हो ।

बिंदू

बी.ए. तृतीय वर्ष

महकती हुई बेटियां

घर के आंगन में फूल-सी महकती हुई बेटियां,
 बड़ी अच्छी लगती चहकती हुई बेटियां ।
 खुशियां ही खुशियां घर में भर देती हैं बेटियां,
 जरा-सी डांट पर भी रूठ जाती हैं बेटियां ।
 दो परिवारों को स्नेह के बंधन से बांधती हैं बेटियां,
 बहुत कुछ सहती, पर चुप रहती हैं बेटियां ।
 लाड़, प्यार और दुलार की चाहत रखती हैं बेटियां,
 फूल, बिंदी और चूड़ियों से मान जाती हैं बेटियां ।
 माँ की जान, पिता की शान होती हैं बेटियां,
 पूरे घर को महकाएं, वो गुलिस्तां होती हैं बेटियां ।
 उम्मीदों का बोझ अपने सर उठाती हैं बेटियां,
 बड़ी अच्छी लगती है स्कूल, कॉलेज जाती हुई बेटियां ।
 आईपीएस, आईएएस, सीएम और पीएम भी बन जाती हैं
 बेटियां । राष्ट्र गौरव बनकर देश का नाम बढ़ाती हैं बेटियां
 मां जो थक जाए, तो काम में हाथ बंटाती हैं बेटियां,
 खुद भी हंसती और सबको हंसाती हैं बेटियां ।
 जब भी पुकारे, दौड़ कर गले लग जाती हैं बेटियां ।

अर्चना

बी.ए. द्वितीय वर्ष

समय प्रबंधन

समय प्रबंधन :- समय प्रबंधन के लिए स्वयं का मूल्यांकन करें। समय प्रबंधन का तात्पर्य समय के कुशलतापूर्वक प्रयोग से है ताकि इसका सबसे ज़्यादा फायदा हो सके। यह जितना आसान लगता है, उतना ही इस तकनीक का पालन करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जो समय का प्रबंधन कैसे किया जाता है यह सीख गया तो वह जीवन में लगभग सब कुछ हासिल कर सकता है। ऐसा कहा जाता है कि सफलता की दिशा में पहला कदम समय प्रबंधन है। जो अपने समय की ठीक से व्यवस्था नहीं कर सकता है वह हर चीज़ में विफल हो जाता है। कुशल प्रबंधन आपकी उत्पादकता बढ़ाता है, काम की गुणवत्ता सुधारता है और तनाव कम करने में भी मदद करता है। समय प्रबंधन एक बहुत ही आवश्यक कौशल है कि जो हमारे कार्यों उनके उद्देश्यों को निश्चित योजना और प्रबंध की तकनीक है। हर सुबह जो काम निपटाने हैं उनकी सूची तैयार करें। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें। अपने प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए समय निर्धारित करें। अपनी सूची पर नज़र रखें और कार्यों को पूरा करने के बाद सूची से मिलान करते रहें। अपने कार्यों के बीच में ब्रेक लें। प्रत्येक दिन कुछ समय के लिए ध्यान लगाए। स्वस्थ भोजन खाएं और उचित आराम करें।

नैसी

बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं आज के युग की नारी

मैं आज के युग की नारी, न अबला न बेचारी हूँ।
मैं आज के युग की नारी हूँ कम करके मुझको मत आंको,
मैं सारे जग पर भारी हूँ। न अबला न बेचारी हूँ।
मैं आज के युग की नारी हूँ। सदियों से जी औरों के लिए,
सदियों से अत्याचार सहे। हर बात की सीमा होती है।
ऐसे घुट-घुट कर कौन रहे। नहीं डरती हूँ
मैं दुनिया से, अपनों से सदा मैं हारी हूँ।
कम करके मुझको मत आंको, मैं आज के युग की नारी हूँ।
मैं बाहर कम जाती हूँ, परिवार का हाथ बटाती हूँ।
हर काम में हिस्सा लेती हूँ, गृहस्थी की गाड़ी चलाती हूँ।
मां शारदा की वीणा हूँ मैं, मां काली की मैं कटारी हूँ।
कम करके मुझको मत आंको, मैं आज के युग की नारी हूँ।
मन से कोमल न अबला हूँ, मैं अपने दम पर सबला हूँ।
तुम जैसे मुझको देखोगे लक्ष्मी, काली और दुर्गा हूँ।
संस्कार सभी अपनाती हूँ, परिवार का मान बढ़ाती हूँ।
कम करके मुझको मत आंको, मैं आज के युग की नारी हूँ।

रुचि राणा

बी.ए. तृतीय वर्ष

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया हैं बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो, जिनके पास नहीं है बेटी।

मुनीष राणा

बी.ए. तृतीय वर्ष

आजादी

पंछी है कैद अगर, तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर, दिया जलाकर रौशनी कर तू।
बीत गए कई साल, रुढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारें सारी, आगे बढ़ विजयी राह पर।
इन वीरों ने क्या पाया ? अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू छू ले आसमान, आजादी पे है सबका हक।

रिया

बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि ऊँ है। मेरी हिन्दी भाषा भी, इसी ऊँ की देन हैं। देवनागरी लिपि है, इसकी देवो की कलम से उपजी बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई, हिन्दी ही है इन सब की जननी। प्रकृति की हर इक चीज अपने में सम्पूर्ण है। मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है। जो बोलते हैं वही लिखते हैं, मन के भाव सही उभरते हैं। हिन्दी भाषा ही तुम्हें प्रकृति के समीप ले जाएगी, मन की शुद्धि, तन की शुद्धि सहायक यह बन जाएगी। कुछ हवा चली है ऐसी यहां कहते हैं, इस मातृभाषा को बदल डालो। बदल सकोगे क्या तुम अपनी माता को? मातृभाषा का क्यों बदलाव करो। देवो की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो। बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो। हर-इक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो। हिन्द की जड़ों पर आओ हम गर्व करें, हिन्दी भाषा पर आओ गर्व करें।

रुच्य कुमारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

सोच और समझ में अंतर

एक डॉक्टर चाहता है कि - हर आदमी बीमार हो।
वकील चाहता है कि हर आदमी झगडालू हो।
पुलिस चाहती है कि हर आदमी जुल्मी हो।
ठेकेदार चाहता है कि हर आदमी मजदूर हो।
दारू का ठेकेदार चाहता है कि हर आदमी शराबी हो।
बैंक चाहता है कि हर आदमी कर्जदार हो।
नेता चाहता है कि हर आदमी भोला-भाला और अनपढ़ हो।
पुजारी चाहता है कि हर आदमी अंधविश्वासी हो।
तांत्रिक चाहता है कि हर आदमी भूत-प्रेतों से डरता रहे।
लेकिन एक शिक्षक ही है जो हमेशा चाहता है कि हर स्त्री पुरुष पढ़ा लिखा हो और जीवन में सफलता प्राप्त करके आगे बढ़े, जिससे वह स्वयं का, अपने परिवार का, मानव समाज का और देश का विकास करें।

काजल
बी.ए. प्रथम वर्ष

हम वो परिंदे नहीं, जो उड़ना छोड़ देंगे

यह आसमां छिन गया तो क्या? नया ढूँढ लेंगे,
हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे !!
मत पूछ हौंसलें हमारे आज कितने विश्रब्ध हैं, एक नई शुरुआत, नया आरंभ तय है, माना अभी हम निःशब्द हैं !!
यह पारावर छूट गया तो क्या?
नया सागर ढूँढ लेंगे, हम वो कश्तियां नहीं जो तैरना छोड़ देंगे !!
कदम चलते रहेंगे जब तक श्वास है, परिस्थिति से परे स्वयं पर हमें विश्वास हैं, एक रास्ता मिला नहीं तो क्या?
नई राहें ढूँढ लेंगे, हम वो मुसाफिर नहीं जो चलना छोड़ देंगे !!
हम वो परिंदे नहीं, जो उड़ना छोड़ देंगे।

श्वेता
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कुछ करना है, तो हटकर चलो

कुछ करना है, तो हटकर चलो,
थोड़ा दुनिया से हटकर चलो।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं।
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना काम के मुकाम कैसा? बिना मेहनत के दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मंजिल, तो राह में आराम कैसा?
अर्जुन-सा निशाना रख, मन में न कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस उसी पर अपना ठिकाना रख।
सोच मत, साकार कर, अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल, किसी और का
ना इंतजार कर।
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले है,
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी में आज भी झमेले है।

नितिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष

सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा उपायों के प्रयोग द्वारा सड़क हादसों की रोकथाम और बचाव है। सड़क सुरक्षा लोगों द्वारा सड़क सुरक्षा नियमों की अनदेखी और वाहनों की भिड़ंत से हादसों से होने वाली मौतों की संख्या बढ़ रही है। सभी लोगों के लिए जीवन भर सड़क सुरक्षा उपायों का अनुसरण करना बहुत ही अच्छा और सुरक्षित है। वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग नहीं करना चाहिए। सीट बेल्ट, हेलमेट लगाना जैसे सुरक्षा उपायों को अपनाना चाहिए।

निशा देवी
बी.ए. तृतीय वर्ष

हिमालय की गोद में धौलाधार पर्वत के आंचल में बसा एक छोटा-सा नगर, पालमपुर

पालमपुर से धौलाधार पर्वत श्रेणी की खूबसूरत बर्फ से ढकी हुई चोटियां दिखाई देती हैं जो बेहद आकर्षक और अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती हैं। पालमपुर धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। हिमाचल प्रदेश का यह खूबसूरत पहाड़ी शहर हिमालय की गोद में बसा हुआ प्राकृतिक सुंदरता का खजाना है। यह शहर 'टी-सिटी' के नाम से भी जाना जाता है पालमपुर में नदियाँ, खूबसूरत झरने, हरी-भरी मनमोहक घाटियाँ, बर्फीली पहाड़ियाँ तथा चाय के बागानों के साथ-साथ यहां कई पर्यटन-स्थल हैं। बीड़ बिलिंग पालमपुर, पैराग्लाइडिंग के लिए एक लोकप्रिय स्थान है जहां पर देश-विदेश से भी लोग आते हैं। यहां की खूबसूरती और हरियाली तथा यहां का शांत वातावरण बेहद अद्भुत शांति और मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। बीड़ बिलिंग, तिब्बती और बौद्ध कलाकृति की शानदार और अद्भुत कला के समृद्ध इतिहास को दर्शाता है। यह संग्राहलय धर्मशाला बस स्टेशन के पास स्थित है। बैजनाथ मंदिर पालमपुर यह लोकप्रिय और भव्य मंदिर जो बैजनाथ भगवान को समर्पित है जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है। इस पवित्र मंदिर के जल में औषधीय गुण पाए जाते हैं जिसके कारण अनेकों बीमारियों ठीक हो जाती हैं। पालमपुर के आसपास स्थित प्रमुख पर्यटन स्थलों में से यह लोकप्रिय स्थल है जहां पर वर्ष-भर लोग दर्शन के लिए आते हैं। ब्रजेश्वरी मंदिर पालमपुर बनेर नदी के किनारे पर बसे इस मंदिर में वर्ष-भर पर्यटकों की भीड़ रहती है।

कविता

बी.ए. तृतीय वर्ष

बचपन

एक बचपन का जमाना था, खुशियों का खजाना था।
चाहत तो चांद को पाने की थी,
परन्तु दिल तितली का दीवाना था।
थककर आना स्कूल से, पर खेलने भी जाना था।
माँ की कहानियों और परियों का अफसाना था।
कागज़ की नाव और हर मौसम सुहाना था।

वक्त और टीचर

वक्त और टीचर में बस थोड़ा सा फर्क है,
टीचर सिखा कर इम्तहान लेता है, परन्तु वक्त इम्तहान
लेकर सिखाता है।
पता नहीं इन किताबों ने कितनों की जिंदगी बदल दी यही
सोच कर हम पढ़ रहे हैं।

मीनाक्षी

बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ

माँ एक ऐसा बैंक हैं जहां आप हर भावना और दुःख जमा कर
सकते हैं और पिता एक ऐसे क्रेडिट कार्ड हैं जिनके पास बैलेंस
न होते हुए भी सपना पूरे करने की कोशिश करते हैं। कुछ न पा
सके तो क्या गम है माँ-बाप को पाया है, यह क्या कम है? जो
थोड़ी-सी जगह मिली इनके कदमों में, वो क्या किसी जन्मत से
कम है।

विशाखा

बी.ए. प्रथम वर्ष

चटपटे चुटकले

1. टीचर - बेटा, अगर सच्चे दिल से भगवान से प्रार्थना
की जाए तो वो जरूर सफल होती है।
स्टूडेंट - रहने दो सर, अगर ऐसा होता तो आप मेरे
सर नहीं, ससुर होते..।
2. लड़का - तेरा नाम क्या है ?
लड़की - तमन्ना लड़का - तेरे बाप का नाम सरफरोशी
है क्या ?
लड़की - क्यों ?
लड़का - क्योंकि सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल
में हैं।
3. टीचर - आज मैं आपको संज्ञा पढ़ाऊंगी
टीचर - पप्पू तू खड़ा हो।
पप्पू - जी मैडम ?
टीचर - लड़की सबसे हंस के बात करती है।
इसमें लड़की क्या है ?
पप्पू - जी लड़की बिगड़ी हुई है, सेंटिंग करना चाहती है
4. पत्नी - अजी सुनते हो? उपर से बैग उतार देना।
मेरा हाथ कुछ छोटा पड़ रहा है।
पति - तो जुवान से try कर ले। पति ICU में है।
5. संता - यार ! मैं जो भी काम शुरू करता हूं मेरी बीबी
बीच में आ जाती है।
बंता - तू ट्रक चला करके देख शायद किस्मत साथ दे
छे।

दिया

बी.ए. प्रथम वर्ष

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

सोशल मीडिया एक ऐसा प्रभावपूर्ण माध्यम बन चुका है, जिसका प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ रहा है। आज के दौर में सोशल मीडिया के बिना लोग अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। समाज में किसी भी विषय को लेकर सामाजिक जागरूकता बढ़ाने में सोशल मीडिया की भूमिका अहम रहती है। सोशल मीडिया के माध्यम से आपसी मेलजोल बढ़ता है और अन्य देशों की खबरों को भी आसानी से सुना जा सकता है। सोशल मीडिया का सामान्य अर्थ है सामाजिक माध्यम अर्थात् ऐसा माध्यम जो समाज की गतिविधियों से जोड़ सके। सोशल मीडिया अन्य मीडिया से भिन्न है। यह पूरी दुनिया को एक नेटवर्क से जोड़ता है। आज भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति बड़ी ही आसानी से विदेशों में रहने वालों के साथ जुड़ जाते हैं। इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट, वॉट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, विभिन्न बलॉग्स आदि सभी सोशल मीडिया का हिस्सा हैं। इन्हीं माध्यमों के कारण आज पूरी दुनिया की खबर पलक झपकते ही वायरल हो जाती है। सोशल मीडिया का एक सकारात्मक पहलु के साथ-साथ नकारात्मक पहलु भी है। इससे धोखाधड़ी, आत्महत्याएं, लूट आदि घटनाओं को बढ़ावा मिलता है। लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इसका उपयोग किस रूप में करे

ज्योति

बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुच्छेद 22

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 22 किसी भी व्यक्ति को कुछ मामलों में गिरफ्तारी एवं निरोध के विरुद्ध संरक्षण प्रदान करता है।
अनुच्छेद 22 कुछ मामलों में गिरफ्तारी एवं निरोध के विरुद्ध संरक्षण :- यदि किसी व्यक्ति को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जाता है तो अनुच्छेद 22 के तहत उसे कुछ स्वतंत्रताएं प्रदान की गई हैं - व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी का कारण जान सकता है। गिरफ्तारी के 24 घंटे के अंदर व्यक्ति को न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। व्यक्ति अपने पंसद के वकील का चयन कर सकता है।

अनुच्छेद 22 : वर्णन

किसी व्यक्ति को जो गिरफ्तार किया गया है, ऐसी गिरफ्तारी के कारणों से यथाशीघ्र अवगत कराए बिना अभिरक्षा में निरुद्ध नहीं रखा जाएगा या अपनी रुचि के विधि व्यवसायी से परामर्श करने और प्रतिरक्षा कराने के अधिकार से वंचित नहीं रखा जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति को, जो गिरफ्तार किया गया है आर अभिरक्षा में निरुद्ध रखा गया है, गिरफ्तारी के स्थान से मजिस्ट्रेट के न्यायालय तक यात्रा के लिए आवश्यक समय को छोड़कर ऐसी गिरफ्तारी से चौबीस घंटे की अवधि में निकटतम मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया जाएगा और ऐसे किसी व्यक्ति को मजिस्ट्रेट के प्राधिकार के बिना उक्त अवधि से अधिक अवधि के लिए अभिरक्षा में निरुद्ध नहीं रखा जाएगा।

रोहित पंत

बी.ए. तृतीय वर्ष

नारी

तू बहन है, तू हमदर्द है, तू बीबी है, तू चाहत है, तू माँ है, तू जन्म है।
नारी से ही दुनिया सारी है, नारी ही सब पर भारी है। जो न समझे नारी का मोल, खोलते देवता नर्क के द्वार।
बिना नारी के नर है अधूरा, क्या नर बिना नारी है पूरी, दोनों ही सिकके के पहलू है, दुनिया दोनों से ही चलती है।
यह ममता की नहीं, परमात्मा की मूरत है जिसकी एक नहीं, अनेक सूरत हैं।

अंजली

बी.ए. तृतीय वर्ष

मझीण कॉलेज सबसे प्यारा

हरे-भरे पेड़ों से घिरा,
कोई मंदिर-सा नज़र आता है ।
दूर से देखो तो जन्नत- सा लगे,
पास जाकर देखो तो स्वर्ग नजर आता है ।
असाहस का साहस बनकर जीवन-भर यह साथ निभाता है
मझीण कॉलेज की यह बात है,
जिसकी अपनी धरती, अपना आकाश है ।
यहां के विद्यार्थी मिलकर खेलते हैं
दोस्त तो दोस्त, दुश्मन से भी दोस्ती निभाते है
मेरे कॉलेज को कॉलेज की तरह समझ यारा ।
जहां क्लासें लगती हैं सदा यारा ।
दूर-दूर से बच्चे पढ़ने आते, मेहनत कर वो
हर साल पास हो जाते क्योंकि प्राचार्य हैं यहां की आन
जिनमें सब बच्चों की बसती है जान ।
नई-नई बातें सबको बताते, कोई कुल्लू, कोई कांगड़ा से
तो कोई मझीण से आकर ज्ञान दे जाते
इस तरह है मेरे कॉलेज की शान, सदा लेती है
मेरी जुबान इसका नाम ।

खुशी चौधरी
बी.ए. प्रथम वर्ष

मेरी माँ

माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है ।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है ।
ऐ इंसान ! माँ को,
नाराज करना तेरी भूल है ।
माँ की ममता माँ का प्यार,
माँ की आंखों के तारे हम ।
गोदी उठाती, लोरी गाती,
पहले खाना हमें खिलाती ।
ममता की मूरत है माँ,
भगवान की सुरत हैं माँ ।
माँ कितना भी लिखूं, उसके लिए कम है,
सच तो यह है कि माँ तू है, तो हम है ।

साक्षी
बी.ए. तृतीय वर्ष

शिक्षा

बहुत जरूरी होती शिक्षा, सारे अवगुण धोती शिक्षा ।
चाहे जितना पढ़ लें हम पर, कभी न पूरी होती शिक्षा ।
शिक्षा पाकर ही बनते हैं, नेता, अफसर, शिक्षक ।
वैज्ञानिक, मंत्री, व्यापारी या साधारण रक्षक ।
कर्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान ।
शिक्षा से ही मिल सकता है, सर्वोपरि सम्मान ।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती, अज्ञानी को ज्ञान ।
शिक्षा से ही बन सकता है, भारत देश महान ।

प्रिया
बी.ए. तृतीय वर्ष

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाएं,
सही तरह चलना सिखाएं ।
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता ।
सबकी मान-प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे ।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथप्रदर्शक है जो -
मेरे मन को सदा ही भाता ।
कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में है सदा गंभीर ।
मन में दबी रहे यह इच्छा
कश ! मैं उस जैसा बन पाता
जे मेरा शिक्षक कहलाता ।

शिवानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

Divyanka

2023-24

ENGLISH SECTION

Staff Editor
Prof. Aarti Gupta



Student Editor
Ruchi Rana
Roll No. 12102



INDEX

Sr. No	Title	Writer
1.	Success	Ruchi Rana, B.A. 3rd Year, 12102
2.	Wonderful Mother	Munish, B.A. 3rd Year, 12123
3.	Importance of Education	Riya, B.A. 2nd Year, 12220
4.	Exam Days	Komal, B.A. 3rd Year, 12127
5.	God is One	Anushika, B.A. 2nd Year, 12226
6.	Why not a Girl	Priyanka, B.A. 1st Year, 12221
7.	What is Life	Anjali, B.A. 2nd Year, 12214
8.	Role of Youth in Nation Building	Sahil Kumar, B.A. 3rd Year, 12131
9.	Meaning of Success	Ritika, B.A. 3rd Year, 12112
10.	Beauty of Life and its Importance	Bintu, B.A. 3rd Year, 12147
11.	My First Day at College	Neha, B.A. 3rd Year, 12105
12.	Failure	Ruchi Rana, B.A. 3rd Year, 12102
13.	My College	Sakshi, B.A. 3rd Year, 12139
14.	The Pahari Language	Jyoti Rana, B.A. 3rd Year, 12109
15.	Purpose of Life is not Happiness	Rohit Pant, B.A. 3rd Year, 12148
16.	Value of Time	Navjot Singh, B.A. 3rd Year, 12133
17.	Atmosphere	Vivek Kumar, B.A. 2nd Year, 12218
18.	Life	Savita Devi, B.A. 3rd Year, 12146
19.	Dear Bestie	Kanchan, B.A. 3rd Year, 1211521
20.	Mother's Love	Sweta Devi, B.A. 2nd Year, 12222
21.	Why God Made Teachers	Neha, B.A. 3rd Year, 12135
22.	My Aim in Life	Ruchi, B.A. 3rd Year, 12101
23.	Library Rules	Nisha Devi, B.A. 3rd Year, 12122

Role of Communication in Parent-Child Relationship

“ The best inheritance a parent can give his children is a few minutes of his time each day.”-

O.A.Battista

Parents play a vital role in mental and physical growth of their children. We know well that a child's evolution begins with her/his mother's womb. After birth, mother becomes the first educator who along with the father shows the right path to the child. Then the journey of life begins and the child comes in contact with others including relatives, friends and others and his/her learning from the society begins. A child learns from family, friends, relatives, teachers and even unknown ones. Only parents by spending time with their kids can guide their ward to understand countless human emotions and their impact on personality.

Earlier it was believed that stern and strict parents can shape the destiny of their children as for them strictness, less communication and rigidity were the parameters for sure shot success of their children. No doubt, this formula worked as people preferred to live in joint families and if parents were strict, grandparents and cousins were there for them. There were least distractions like mobiles, televisions, laptops etc. Little minds were not occupied with various concepts. Their questions dealt with day-to-day activities. Children were more concerned about the knowledge contained in books. Some children with good reading habit had more curiosity and questions as compared to average ones. But it was not necessary for elders to answer every question. There was parent-child communication as much as it was desired by the parents.

Now the time has changed. Instead of joint family system, we have turned towards nuclear families, which we feel there is need of the hour. Instead of three or four kids, now parents prefer to be with one or two children. In most of the families both the parents are working, so they reach home in the evening. There are a few families where one parent prefers to be with the child and the other goes out for earning. In this scenario, space for communication between parent and child has decreased. Main reason for this is intrusion of mobile and internet. In the evening, parents and children want their space with mobile. Both have forgotten their concern, love and care for each-other, which is the core of life. It is truly said: **“It's not only children who grow, parents do too.”**—James Maynad

These lines clearly depicts the advantages of being blessed with kids as when they grow, parents also enjoy second childhood with them. Kids give them second chance to be little ones again, grow and learn again. As children start growing, their new learning begins too. This is a very sensitive phase for parents as now kids learn from the behavior, habits and attitude of their parents. So this time, every word uttered by parents either leaves a scar or motivates the children. So at this stage, children need more positive communication, motivation and encouragement.

Teenage is the age when youngsters need real friends, who should be their parents because only family members i.e. parents and children know the real conditions prevailing inside their home. Secondly, parents also know the complexities, confusions and curious questions of the teenagers as they have a better experience of the same. Here the role of communication between parents and children becomes more vital. Generally, we see when a child shares his/her confusion regarding her/his choice in life, his/her friends, career or any curiosity with parents, the child fails to get the desired response. Still there remains a strict parent inside, who makes them show themselves as very disciplined and well mannered in front of children. Some parents react by saying that they never thought of the concepts like infatuation, bunking the classes, going for outing with friends or behaving badly with others. Here the communication pauses but if this

persists, then the child starts feeling alienated and instead of making one more effort to be close to his or her parents, the child starts to maintain a distance, which proves to be harmful and adversely affects this precious relationship. Both sides need to give time to each-other because this is a precious relation, which simply needs emotions-care, love, affection and understanding.

At present, we know the condition of society well, if the children don't trust their parents, there are countless other hands for them but they are there for their own benefit. They know well how to use youngsters for their filthy designs.

“Love your parents and treats and treat them with love and care, for you will only know their value when you see their empty chair.”

We should never forget that we are progressing, learning and achieving success because of our parents, who sacrificed their dreams, necessities and countless desires, just to see us moving ahead on the path of success. At times, children complain about their parents, their behavior, manners, etiquettes but they forget to be grateful for their sacrifices made by their parents for their achievements and success. Simultaneously parents need to change themselves to be friendly and cordial with their children. Children need parents who guide them well, who listen to them, share their own experiences with them and give them opportunity to take calculated risk to do something different in life.

Dear youngsters, value your parents even if they are illiterate, live in their own way, their dressing is outdated or they speak the language not liked by you because there can never be any relation as honest and fair as that of parents and children.

Aarti Gupta
Assistant Professor
Department of English
GDC Majheen

Success

Being successful is not always as same as being on top or at the first position. It cannot be defined in a single line. Success is the feeling that person feels after achieving something better than before. Success is not only being first in a race but it is the achievement that one achieves by performing better than his/her previous attempts in any field. It is at every level of improvement in our life. When a businessman achieves the target and earns more than before it is a success for him. Success may vary from person to person. For a student being first in class is success, whereas for an athlete being first in a state country or may be in the world is success. For achieving success, a person should possess some qualities. Self-discipline is one of those qualities. Being a student, business person, employee, or politician etc. person should first be self-disciplined. Discipline is the key to present ourselves. If a person is disciplined She can plan things and implement those in a better way.

Ruchi Rana
B.A. 3rd Year.

Wonderful Mother

God made a wonderful mother,
A mother who never grows old;
He made her smile of the sunshine,
And he molded her heart of pure gold;
In her eyes, he placed bright shining stars,
In her cheeks, fair roses you see;
God made a wonderful mother.
And he gave that dear mother to me.

Munish Rana
B.A. 3rd Year.

Exam Days

Mom and Dad say, plz now grow...
It's your exam don't become low...
The day has come now I will show...
Shit !! My place is 1st in the row...
All say bad luck I say no.....
Ups and downs come only to glow.....
Brain says no more stress...
Mind still replied do your best...
These are the days we all have to face...
That is why they are called as exam days....

Komal
B.A. 3rd Year.

Importance of Education

First of all, education gives the ability to read and write to anyone. A good education is extremely essential for everyone to grow and succeed in life. Education increases self confidence and assists in developing the personality of a person. Education plays a big role in our life

Riya
B.A. 2nd Year.

God Is One

Flowers are many
But garden is one.
Planets are many
But universe is one.
Ways are many
But goal is one.
Members are many
But family is one.
States are many
But nation is one.
Religions are many
But God is one.

Anushika
B.A. 2nd Year.

Why Not A Girl

People pray for a boy,
 Not for a girl.
 They love to have a boy,
 Not a girl.
 Their blessing for a boy,
 Not for a girl.
 But In need of wealth
 They pray to goddess Lakshmi,
 In need of courage,
 They pray to goddess Durga,
 In need of education,
 They pray to goddess Sarswati.

Priyanka
B.A. 2nd Year.

What Is Life

Life is a dream,
 Just flowing as a stream.
 Life is a sorrow,
 So don't depend on tomorrow.
 Life is a play,
 To reach God its only way.
 Life is a war,
 Its time is so far.
 Life is joy,
 So enjoy this life.
 Life is a contest,
 In which there is neither east nor west.
 Life is happiness,
 So be happy always.
 Otherwise it would be useless.

Anjali
B.A. 2nd Year.

Role Of Youth In Nation Building

The intelligence of people affects the importance of a country. All people working together for the country is nation building. The future generation is an integral part of the country. For a better future, giving importance to the youth is necessary. Youth is the most active part of the country. All sorts of creativity can be found if we look through the minds of the youth.

Sahil Kumar
B.A. 3rd Year.

Meaning of Success

Success is a word that brings happiness in everyone's life. In simple words, it means doing right, in right way, at right time. Don't think about failure, in the path of success as failure is a part of success. Without failure no one created history in the world. "Maintain the enthusiasm, failure to failure and finally failure to success is real success. Success depends on belief system, make a steel strong belief system and positive attitude for success".

Gautma Budha said, "He is able who thinks he is able to." If you can imagine it, you can do it. If you can dream it, you can achieve it. Take a step towards creating the history.

Lytton said, "Talent does what it can, genius does what it must. If you have not got an opportunity then you have ability to create an opportunity." Knowing how to get along with people is the hallmark of success.

Be positive be happy.

Ritika
B.A. 3rd Year

Beauty of Life and its Importance

- * Life is essential for a flourishing ecosystem. Wherever there is life, there has to be a healthy ecosystem, conducive of growth.
- * Human life is a greater gift as it is the most powerful of the existing life forms.
- * Every life form on the planet has a specific purpose.
- * Trees, animals, birds, humans, insects, all contribute to the growth of the planet and other lives, in their own way.
- * Humans have exceptional ability to dream, work and achieve, like no other species on the planet.
- * The true value of life lies in protecting others and helping them.
- * Life must not be judged on how long it is, but on how valuable it is.

Bintu
B.A. 3rd Year.

My First Day at College

College is a dreamland of every student's educational career. It is a beautiful period of learning, enjoyment, freedom and friendship. Sweet memories of college life are simply amazing. They have an everlasting impact on human memory. College life has its own charm and beauty. Each and every moment spent there is always worth-living worth-enjoying and also worth-remembering. Out of all the days, we can never forget the first day of college life. First day of college is really very special and memorable for every student. The first of anything impresses us the most. That is why we hardly ever forget our first love, our first success, our friend. Likewise, we cannot forget our first day at college.

Neha
B.A. 3rd Year.

Failure

Failure is an opportunity to begin again with renewed determination. We gain experience from failures. In fact failures are our best teachers. They reveal our weaknesses and shortcomings so that we can work on them and improve ourselves. A failure is not the end of the road. A failure does not mean everything is over for us. A failure is like stumbling or falling from which we must get up and continue towards our goal with renewed determination. Success and failures are a part and parcel of human life. We may not like failures yet they can come anytime most unexpectedly. A person who loses heart after failure is a lost person. We need not be afraid of failure because it is a part of the path to success. We must utilise failure to our advantage so that we can succeed ultimately.

Ruchi Rana
B.A. 3rd Year.

My College

College is a place where, we go for receiving formal education after completing the school. I feel lucky that I have successfully completed my school education with recognition and good results. Now I am a college student. The name of my college is Govt. Degree College Majheen. It is a place enriched with natural beauty. People here are very honest and work together. Education here is very good. I like the teaching staff of the Majheen College very much. There are about 200 students studying in Majheen College. Students from here and far off villages come here to receive education. Our college has its discipline. The teaching staff is very helpful, friendly and supportive to the students. All children come to college on time and daily. So this is the wonder that the students of Majheen College make good results in University Examinations.

Sakshi
B.A. 3rd Year.

The Pahari Language

The word Pahari means of or belonging to the mountains and is specially applied to the groups of language spoken in the Sub-Himalayan hills extending from the Bhadrawah, north of the Punjab to the eastern parts of Nepal. To its North and East, various Himalayan Tibeto Burman language are spoken, to its West there are Aryan languages connected with Kashmiri and Western Punjabi, and to its South it has the Aryan languages of the Punjab and the Gangetic plain. Viz-in order from west to east, Punjabi, western Hindi, eastern Hindi and Bihari. The Pahari languages fall into three main groups. In the extreme east there is khaskura or eastern pahari commonly called Naipali the Ayan language spoken in Nepal. Next in Kumaun and Garhwal, we have central pahari language, Kumauni and Garhwali. Finally in the west we have the western pahari languages spoken in Jaunsar-Bawar, the Shimla hill states, Kullu Mandi and Suket. Chamba and western Kashmir. As no census particulars are available for Nepal we are unable to state how many speakers of eastern Pahari there are in its proper home. Many persons speaking the language resided in British India. In 1891, the number counted in British India was 24,262. But these figures are certainly incorrect. In 1901 the number was 143721. Although the survey is throughout based on the census figures of 1891, an exception will be made in the case of eastern pahari, and those for 1901 will be taken, as in this case they will more nearly represent the actual state of affairs at the time of the preceding census.

Jyoti Rana
B.A. 3rd Year.

Purpose of Life is Not Happiness : But its Usefulness

Darius Foroux writes about the battle most of us face between being happy and feeling fulfilled, in life. We love doing things that make us happy. From going on holiday to buying a new car, we keep choosing that next nugget of happiness. If you change it up and look at happiness as being a by product of your actions, choices and decisions that involve working towards a larger purpose, you'll begin to notice how wonderful life really can be. True happiness is derived from moments of interaction and connection. I'm happiest when doing something useful for somebody else, whether it be a friend, family member, colleague or even a stranger. When I do something valuable for them, they feel happy which makes me happy ! Find something useful to do for someone. Do it let me know how you feel after wards.

Rohit Pant
B.A. 3rd Year.

The Value of Time

- * To realize the value of one year, ask a student who failed a grade.
- * To realize the value of one month, ask a mother who gave birth to a premature baby.
- * To realize the value of one week, ask the editor of a weekly newspaper.
- * To realize the value of one hour, ask lovers who are waiting to meet.
- * To realize the value of one minute, ask a person who missed his/her train.
- * To realize the value of one second, ask a person who barely avoided an accident.
- * To realize the value of one mili second, ask a person who won a silver medal in Olympics.

Navjot Singh
B.A. 3rd Year.

Atmosphere

Atmosphere is just a thin layer of gases that surrounds the earth, but a vast expanse of air which envelops the earth. It protects the earth's surface from the sun's harmful ultraviolet rays. This thin layer also helps the earth from becoming too hot or too cold. Atmosphere is a moving source of life for every creature of the planet. The atmosphere of our home planet is made up of three primary gases. These gases are Oxygen, Hydrogen and argon. Additionally there are other small particles floating in the atmosphere such as dust, water, and carbon dioxide - 5.6%, Methane - 18% CFCs - 13%, Ozone - 7%, Nitrous Oxide - 6%

Vivek Kumar
B.A. 2nd Year.

Life

Life is like a river that goes on flowing.
Life includes existence.
Life includes hope and survival.
Life is also about happiness and sorrows.
Experience often shapes a person's life.
The meaning and purpose of someone's life is important.
Meanings and purposes of life change with time.
Life is often said to be precious.
Life is not the same for everyone and happiness has to be found.

Savita Devi
B.A. 3rd Year.

Dear Bestie

No matter how many
Friends I have,
 No matter how much
 I talk to them or spend
time with them,
Always remember, that
No one can replace you.
 You were, are and will
 Always be- irreplaceable.
You have a special place
in my heart forever.
 Sincerely
 Your Bestie For Life

Kanchan
B.A. 3rd Year.

Why God Made Teachers

When God created teachers,
He gave us special friends
To help us understand His world
And truly comprehend
The beauty and the wonder of everything we see,
And become a better person with each discovery.
 When God created teachers,
 He gave us special guides
 To show us ways in which to grow
 So we can all decide
 How to live and how to do
 What's right instead of wrong
 To lead us so that we can lead
 And learn how to be strong.
Why God created teachers.
In his wisdom and his grace,
Was to help us learn to make our world
a better, wiser place.

Neha
B.A. 3rd Year.

Mother's Love

You are the sunlight in the day,
 You are the moon I see far away,
 You are the tree I lean upon,
 You are the one that make troubles be gone,
 You are the one who taught me life,
 How not to fight, what is right,
 You are my love, my life, my mom.
 You are the one who cares for me,
 You are the eyes that help me to see.
 You are the one who knows me the best,
 When its time to have fun and time to rest.
 You are the one who has helped me to dream.
 You have my hears and you hear my screams.
 Afraid of my life but looking for love.
 I am blessed, for God sent you from above.
 You are my friend, my heart and my soul.
 You are the world's greatest friend I know.
 You are my love, my life, my mom.

Sweta Devi
B.A. 2nd Year.

My Aim In Life

- * The aim is a target or purpose that every person has in life. It directs a person and motivates him/her to achieve them.
- * Every Individual must set well defined objectives to achieve in life. It helps them to understand the career path and motivates them to move forward.
- * A goal in life gives a person enough joy and happiness and sets a leading example for others to live life in the best possible manner.

Ruchi Kumari
B.A. 3rd Year.

Library Rules

The following shall be entitled to use the college library and borrow books for home. Reading students on rolls of the college shall be permitted to keep books for a period of one month on a request by the borrower. Books can be recalled by the librarian at any time. A fine of Rs. 1.00 per day per book will be charged from a borrower for keeping books beyond the period of on month. Reference books will not be issued to any one. Library books will be issued to student's identity card which will be stamped by the counter clerk every time a book is borrowed or returned. A students will be responsible for all the books issued to him/her on the card even if the card is lost.

Nisha Devi
B.A. 3rd Year.

Divyanka

2023-24

COMMERCE & PLANNING SECTION

Dr. Neelam
Staff Editor



Varun
Student Editor



INDEX

Sr. No.	Subject	Writers
1.	काला धन (Black Money)	Ruchi Rana, B.A. 3rd year
2.	भारतीय स्वास्थ्य सेवा खर्च और प्रभाव	Shivani Thakur, B.A. 3rd year
3.	Digital Transformation	Deep Kumar, B.Com 3rd year
4.	E-commerce Marketing : Strategies to Boost online Sales	Meenakshi Rana, B.A. 2nd year
5.	उद्यमी और उद्यमिता को बढ़ावा	Komal Choudhary, B.Com 2nd year
6.	Artificial Intelligence	Abhishek Choudhary, B.Com 3rd year
7.	मझीण क्षेत्र में विकास की संभावनाएं	Divyanshu Sharma, B.Com 3rd year
8.	जीएसटी और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव	Varun, B.Com 3rd year

Education and Employment

Education and employment are important aspects shaping individuals' futures and contributing to a nation's growth and development. Education is a weapon to improve one's life. It is a lifelong process that ends with death. Education improves one's knowledge, skills & develops personality and attitude. It plays a significant role in developing human resources and extremely important for employment. Most importantly it affects the chances of employment for people. In the terms of economics employment means the state of having a job or being employed. The one who employs is called the employer, and the one who is getting paid for providing services is the employee. Highly educated individual is most likely to get a good job. The relationship between education and employment is a complex one. On the one hand, education is a major factor in determining an individual's employment prospects. Higher levels of education tend to lead to higher-paying and more secure jobs. On the other hand, employment can also be a key factor in educational attainment; having a job can help individuals pay for their education, and the skills and knowledge acquired from a job can often be applied to educational pursuits. In the Indian context, these domains hold immense significance due to the country's large population and the aspirations of its youth. However, India faces unique challenges in ensuring that everyone is fully equipped with the necessary skills and knowledge to thrive in the job market. India's education system is vast and diverse, catering to a wide range of students across different socioeconomic backgrounds. However, challenges like limited access to quality education, inadequate infrastructure, and outdated curriculum persist. There is a need to focus more on improving the quality of education, enhancing teacher training programs, & promoting digital literacy to bridge the urban-rural divide and ensure equal opportunities for all.

Dr. Neelam Kumari

Assistant Professor

Dept. of Commerce

Editor: Commerce & Planning Section

काला धन

भारत की ब्लैक इकॉनमी का कुल मूल्य देश की GDP के 62 प्रतिशत के बराबर है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि विगत कुछ वर्षों में काला धन या ब्लैक मनी भारत में राजनीतिक और आर्थिक रूप से सर्वाधिक चर्चित मुद्दा रहा है। जानकार मानते हैं कि अब तक भारतीय अर्थव्यवस्था को काला धन से अत्यधिक नुकसान पहुंचा है। हलांकि सरकार ने वर्ष 2016 में काला धन समाप्त करने के उद्देश्य से नोटबंदी जैसा बड़ा कदम उठाया था, परन्तु जब RBI ने वर्ष 2017-18 के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तो यह तथ्य सामने आया कि प्रतिबंधित नोटों में लगभग 99.3 प्रतिशत नोट बैंको के वापस आ गए हैं। वस्तुतः नोटबंदी के विकल्प के अतिरिक्त काला धन अधिनियम को भी एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जा रहा था जिससे लोगों को अपेक्षाएं थी कि सरकार को इससे काफी अधिक मात्रा में काले धन की राशि प्राप्त होगी, परन्तु इसी वर्ष मई माह में जारी आंकड़ों के अनुसार उन विदेशी संपत्तियों से मात्र 12,500 करोड़ रुपये ही प्राप्त किये जा सके जिन पर करारोपण नहीं किया गया था। उपरोक्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि काले धन जैसी गंभीर समस्या से निपटने के लिये अब तक सरकार ने कई प्रयास किये हैं, परन्तु विभिन्न कारणों से अब तक इस उद्देश्य की प्राप्ति संभव नहीं हो पाई है। अर्थशास्त्र में काले धन की कोई आधिकारिक परिभाषा नहीं है, कुछ लोग इसे समानान्तर अर्थव्यवस्था के नाम से जानते हैं तो कुछ इसे काली आय, अवैध अर्थव्यवस्था और अनियमित अर्थव्यवस्था जैसे नामों से भी पुकारते हैं। यदि सरल शब्दों में इसे प्रभाषित करने का प्रयास करें तो कहा जा सकता है कि संभवतः काला धन वह आय होती है जिसे कर अधिकारियों से छुपाने का प्रयास किया जाता है। काले धन को मुख्यतः दो श्रेणियों से प्राप्त किया जा सकता है, गैर कानूनी गतिविधियों से और कानूनी परन्तु असूचित गतिविधियों से। उपरोक्त दोनों श्रेणियों में पहली श्रेणी ज्यादा स्पष्ट है, क्योंकि जो आय गैर-कानूनी गतिविधियों से कमाई जाती है, वह सामान्यतः कर अधिकारियों से छुपी होती है और इसलिए उसे काला धन कहा जाता है। दूसरी श्रेणी में उस आय को सम्मिलित किया जाता है जो कमाई तो कानूनी गतिविधियों से जाती है, परन्तु उसके बारे में कर अधिकारियों को सूचित नहीं किया जाता है।

भारत में काले धन की समस्या 1960 के दश से शुरू हुआ था। उस समय इसका मुख्य कारण आय और कॉपोरेट का की उच्च दर को बताया गया था। उच्च करों की दर का परिणाम यह हुआ कि आम लोग और व्यापारिक समुदाय काफी बड़े पैमाने पर कर की चोर करने लगे। वर्ष 1991 में उदारीकरण के पश्चात काले धन का मुद्दा और भी जटिल हो गया। ग्लोबल फाइनेंशियल इंटीग्रेटी रिपोर्ट में उल्लेख किया गया था कि काले धन के रूप में भारत ने वर्ष 2001-2010 की समय सीमा में लगभग 120 बिलियन अमेरिकी डॉलर खो दिये। विदित है कि इस रिपोर्ट में काले धन के निर्माण में भारत को 8 वां स्थान प्राप्त हुआ था। सरकार ने काले धन को कम करने और कर संग्रह को बढ़ाने आदि को विमुद्रीकरण के उद्देश्यों के रूप में प्रस्तुत किया था। RBI द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर कई विशेषज्ञों का मानना था कि यदि विमुद्रीकरण का उद्देश्य काले धन को समाप्त करना था तो आंकड़ों के अनुसार यह योजना असफल रही है। बेनामी लेनदेन संशोधन अधिनियम, 2016 यह अधिनियम बेनामी लेनदेन को रोकता है और बेनामी संपत्ति को जब्त करने का प्रावधान है। संशोधित कानून में यह प्रावधान है कि इसके अलावा उस व्यक्ति को संपत्ति के बाजार मूल्य का अधिनियम 25 प्रतिशत हिस्सा भी शुल्क के रूप में देना होगा। दोहरे करवंचना समझौते (DTAA): DTAA करदाताओं को उनकी अर्जित आय पर दो बार कर का भुगतान करने से बचाने के लिए भारत तथा अन्य देशों द्वारा हस्ताक्षरित किया गया था। वर्तमान में भारत ने 88 देशों के साथ DTAA संधि पर हस्ताक्षर किये हैं। सरकार ने 2.5 लाख रुपये से अधिक के लेन देन के लिए पैन PAN को अनिवार्य बना दिया है, जिसका प्रमुख उद्देश्य कर अधिकारियों से छुपाए जाने वाले लेन-देन को नियंत्रित करना है। आयकर विभाग को आय के एक निश्चित प्रतिशत के रूप में व्यय की सीमा भी निर्धारित करना चाहिए ताकि इससे अधिक व्यय करने पर वह स्वयं जांच के दायरे में आ जाए। शिक्षण संस्थानों की कैपिटेशन फीस पर नजर रखनी चाहिए। धर्मार्थ संस्थाओं के लिए वार्षिक रिटर्न अनिवार्य बनाना, इन संस्थाओं का पंजीकरण एवं विभिन्न एजेंसियों के बीच सूचना के आदान-प्रदान की व्यवस्था होनी चाहिए। चुनावों में काले धन का प्रयोग रोकने के लिए व्यापक कार्य योजना बनानी चाहिए क्योंकि यहां काला धन खपाना काफी आसान है जो काला धन के सृजन को प्रेरित करता है। राजनीतिक दलों को सूचना का अधिकार (RTI) के दायरे में लाना चाहिए एवं इनके बही-खातों की नियमित ऑडिटिंग करनी चाहिए। हवाला कारोबार पर अंकुश लगाना चाहिए और आयकर विभाग के अधिकारों एवं स्वायत्ता में वृद्धि की जानी चाहिए।

रुचि राणा
बी.ए. तृतीय वर्ष

भारतीय स्वास्थ्य सेवा खर्च और प्रभाव

भारतीय संविधान सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार को राज्य का प्राथमिक कर्तव्य मानता है। भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली जटिल और बहुआयामी है, जहां सरकारी और निजी दोनों ही सुविधाएं देश को प्रदान कर रही हैं। निजी चिकित्सा क्षेत्र शहरी क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के 70 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के 63 प्रतिशत के लिए स्वास्थ्य देखभाल के प्राथमिक स्रोत है। नैदानिक उपकरणों की अनुपलब्धता, योग्य और अनुभवी स्वास्थ्य पेशेवरों की उन ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा करने की अनिच्छा जो आर्थिक रूप से कम आकर्षण हैं एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। डॉक्टरों की आबादी का केवल 2 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। जहां भारत की 68 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। भारत में डायग्नोस्टिक सेवाओं का प्रवेश मुख्य रूप से महानगरों और बड़े शहरों के आसपास केंद्रित है। ग्रामीण भारत में, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच केवल मूल स्वास्थ्य सेवाओं को पूरा करने वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक सीमित है, ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य संबंधी विशिष्ट समस्याएं पोषण की कमी, मातृ और परिणाम की स्थिति में सहायता की कमी, मलेरिया, डायरिया, क्षयरोग और श्वसन रोगों जैसे संक्रामक रोगों की सामान्य रोगों की सामान्य घटनाओं से संबंधित हैं, स्वच्छता के बुनियादी ढांचे की कमी, जागरूकता की कमी, सुविधाओं तक सीमित पहुंच, प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मचारियों की कमी, दवाओं की कमी और अच्छे डॉक्टर आज ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली भारत की आबादी में 70 प्रतिशत से अधिक की प्रमुख चुनौतियां हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार के खर्च बढ़ने से इलाज के दौरान आम आदमी की जेब पर पड़ने वाला बोझ कम हो गया है। आर्थिक सर्वे के अनुसार 2014 की तुलना में 2019 में जेब पर पड़ने वाले बोझ में 16 प्रतिशत की कमी आई है। भारत और जन औषधि स्कीम से गरीबों को एक लाख करोड़ रुपये की बचत हुई है। सर्वे के अनुसार 2014 में जहां स्वास्थ्य क्षेत्र पर जीडीपी का महज 1.2 प्रतिशत खर्च होता था, वहीं 2022-23 के वित्तीय वर्ष में यह 2.2 प्रतिशत पर पहुंच गया। 2017 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के तहत सरकार ने 2025 तक जीडीपी का 2.5 प्रतिशत स्वास्थ्य के मद में खर्च करने का लक्ष्य रखा था, जिसे हासिल करना अब आसान दिख रहा है। राज्यों से भी उनके बजट का 8 फीसदी स्वास्थ्य पर खर्च करने के लिए कहा गया जिसमें दो तिहाई प्राइमरी केयर के लिए प्रावधान करने को कहा गया है। 2023-24 में स्वास्थ्य परिवार कल्याण के लिए बजट प्रावधान को बढ़ाकर 86,175 करोड़ रुपये कर दिया गया है जो 2017-18 में केवल 47,353 करोड़ रुपये था यानि इस अवधि के दौरान बजट प्रावधान में 82 प्रतिशत का इजाफा किया गया है।

स्वास्थ्य सेवा से संबंधित सरकारी योजनाएं :- सरकार ने देश की ग्रामीण आबादी के लिये स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में सुधार के लिए कई पहलों की शुरुआत की है, जैसे आयुष्मान भारत योजना, जिसका उद्देश्य 500 मिलियन से अधिक लोगों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना है। सरकार ने चार मिशन मोड प्रोजेक्ट लॉन्च किए हैं जिसमें पीएम-आयुष्मान, भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन (PM-ABHIM), आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स (ABHWCs), प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PMJAY) और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM) शामिल है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK), राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK)।

शिवानी ठाकुर
बी.ए. तृतीय वर्ष

Digital Transformation

Digital transformation refers to the integration of digital technologies into all aspects of an organization, vitally changing how it operates and delivers value to its. It involves adopting and leveraging digital technologies, processes, and strategies to enhance business processes, improve efficient, and stay competitive in a rapidly evolving digital landscape.

Components of Digital Transformation:-

Technology Integration: Embracing technologies such as cloud computing, big data analytics, artificial intelligence, the Internet of Things (IT), and others to streamline operations and decision-making.

Process Optimization: Rethinking and redesigning existing business processes to leverage digital tools for increased efficiency, ability, and responsiveness to market changes.

Customer Experience: Focusing on improving the customer journey by leveraging digital channels, personalization, and data-driven insights to enhance interactions and satisfaction.

Data Utilization: Harnessing the power of data analytics to gain actionable insights, make informed decisions, and identify new opportunities for innovation.

Cultural Shift: Encouraging a mindset of innovation, adaptability, and continuous learning within the organization to embrace and drive digital transformation.

Benefits of Digital Transformation:-

Improved Efficiency: Automation and optimization of processes lead to increased productivity and reduced operational costs.

Enhanced Customer Experience: Digital channels and personalized interactions contribute to better customer satisfaction and loyalty.

Data-Driven Decision-Making: Access to real-time data enables informed decision-making and strategic planning.

Competitive Advantage: Organizations that successfully undergo digital transformation can gain a competitive edge in their industry.

Innovation: Digital transformation fosters a culture of innovation, allowing businesses to explore new business models and revenue streams

Challenges of Digital Transformation:-

Resistance to Change: Employees may resist adopting new technologies or adapting to new ways of working.

Security Concerns: With increased reliance on digital systems, organizations must address cyber security risks and data privacy concerns.

Skill Gaps: The need for digital skills may highlight gaps in the workforce, requiring training and development initiatives.

Integration Complexity: Integrating new technologies with existing systems can be complex and may require careful planning.

Digital transformation is an ongoing process as technology continues to evolve, and organizations need to remain agile to stay ahead in the digital age.

Deep Kumar
B.Com.3rd Year

E-Commerce Marketing : Strategies to Boost Online Sales

In today's digital age, e-commerce has become an important part of business life. More and more businesses are adopting e-commerce as a sales channel to reach a broader customer base, increase revenue and build brand awareness. However, with increased competition and changes in consumer behavior, it is becoming increasingly challenging for businesses to stand out and succeed in the online marketplace. E-Commerce Marketing is the solution to fight with challenges and competition faced by businesses. Some effective e-commerce marketing strategies are hereby mention which help to increase online sales and grow business. **Search Engine Optimization (SEO)** is important for e-commerce business because it helps website rank higher in search engine results pages (SERPs) and increases visibility to potential customers. **Social media platforms** are a powerful tool for e-commerce businesses to connect with their target audience and promote their products. **E-mail marketing campaigns** is an effective way to nurture relationships with existing customers and encourage repeat purchases. **Offer discounts and promotions** can be an effective way to incentivize customers to purchase and increase sales. By offering limited-time discounts, free shipping, or buy-one-get-one (BOGO) offers, you can create a sense of urgency and encourage customers to take action. **Use retargeting and remarketing campaigns** are effective strategies for reconnecting with potential customers who have expressed interest in your products but have not yet purchased. **Optimize product pages** are the heart of your e-commerce website, and optimizing them can significantly impact online sales. **Customer service** is a critical component of e-commerce, and providing exceptional service can help you build trust and loyalty with your customers. Multiple communication channels, fast response times helpful and friendly support, can create a positive customer experience and increase customer retention. **Personalization** is a growing trend in e-commerce, and businesses that provide personalized shopping experiences are more likely to attract and retain customers. Some best practices for e-commerce personalization include using machine learning and artificial intelligence (AI) to analyze customer data, segment your audience, and offer personalized product bundles and recommendations. Ultimately, e-commerce marketing is a vital component of online success. By using effective e-commerce marketing strategies like SEO, social media, email marketing, discounts and promotions, retargeting and remarketing, product page optimization, exceptional customer service, personalization, checkout optimization and metric analysis, increase online sales and digital grow business in huge.

Meenakshi Rana

B.A. 2nd Year

उद्यमी और उद्यमिता को बढ़ावा

उद्यमी को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो व्यापार उद्यम का आयोजन करता है और इसके जोखिम उठाता है। परन्तु एक उद्यमी संगठनों के सृजक के अलावा बहुत कुछ होता है, उद्यमशीलता उसकी विशेषता है और यह एक व्यक्ति का गुण है। ऐतिहासिक रूप से भारत स्वयं रोजगार वाला देश है और यहां नियोक्ता नहीं होते हैं। अर्थव्यवस्था में बड़ी संख्या में कॉपोरेट संगठनों में आ जाने के बाद देश में आज आय उत्पादन का अधिकांश हिस्सा छोटे और मध्यम व्यापार स्वामियों पर केन्द्रित है। ये व्यापार राष्ट्रीय आय और रोजगार के सबसे बड़े अंशदाता हैं और इन्हें लगातार वित्तीय संस्थानों और नीति निर्माताओं द्वारा समर्थन दिया जाता है। स्वयं रोजगार राष्ट्र का आधार है। कोने पर स्थित चाय की दुकान से लेकर किराने की दुकान, कबाड़ी वाला और इंटरनेट की छोटी दुकान, इन सभी उद्यमियों को बढ़ावा देने की जरूरत है तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में इन्हें प्रतियोगिता के लिए सक्षम बनाना आवश्यक है। भारत सरकार ने नवाचार और विकास के लिए सही सामाजिक-आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र देकर निजी उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के मोर्चे पर सदैव अग्रणी स्थान बनाए रखा है। उद्यमी उपक्रम की सीपना हेतु सभी जरूरी साधनों जैसे पूंजी, श्रम, भूमि, यंत्र आदि की व्यवस्था करता है। वह व्यवसाय में जरूरी सभी सूचनाएं तकनीक तथा तथ्य उपलब्ध कराता है। समाज में उद्यमी ही नवप्रवर्तन करते हैं। ये नये उपक्रम की स्थापना करते हैं, नये उत्पाद की खोज करते हैं, उत्पादन में नई विधि अपनाते हैं, नये बाजारों की खोज करते हैं। उद्यमी व्यक्ति सदैव जोखिम में जीना पसंद करता है। उद्यमी की एक विशेषता यह है कि उद्यमी व्यक्तियों के लिए उनका कार्य ही अपने आप में लक्ष्य तथा संतुष्टि का एक बड़ा स्रोत होता है। उद्यमी हमेशा व्यावसायिक अवसरों की खोज में रहता है। एक उद्यमी स्वयं में एक संस्था है, क्योंकि इसके कारण समाज में विभिन्न संस्थाओं का जन्म होता है। आज विकासशील देशों में कई संस्थाएं उद्यमी के रूप में कार्य करती हैं। सरकार स्वयं एक उद्यमी बनकर राष्ट्र के औद्योगिक विकास में योगदान करती है। आधुनिक युग में उद्यमी का संस्थागत स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारत में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए 6 सर्वश्रेष्ठ सरकारी योजनाओं स्टार्टअप इंडिया, मुद्रा योजना, स्टैंड-अन इंडिया योजना, अटल इनोवेशन मिशन (एआईएम), इलेक्ट्रॉनिक विकास निधि (ईडीएफ), प्रधानमंत्री मुद्रा ऋण योजना (पीएमएमवाई) को चलाया है।

कोमल चौधरी

बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

Artificial Intelligence (AI)

Artificial intelligence (AI) refers to the ability of machines to understand the world around them, learn and make decisions, in a similar way to the human brain. AI, machines are getting smarter every day. Contrary to popular depictions of AI, this doesn't mean that machines will become our evil overloads (not yet, anyway!). When you strip away the sci-fi predictions and "be afraid" hype, it's clear that AI is making a very real, very positive contribution to the world – particularly when it comes to AI in business. You'll already be familiar with some of the ways in which organizations are harnessing AI:

- * Smart assistants, including Siri and Alexa
- * Customer service or helpdesk chatbots
- * Facial recognition technology, like that used by Facebook
- * Personalised recommendations on platforms such as Amazon and Netflix
- * Delighting customers with smart products and services
- * Improving business operations

Examples of smart, AI-enabled products and services

- 1. Roomba robot vacuums:** Little vacuum cleaners that look like a giant hockey puck? They use AI to scan the room, pinpoint obstacles and work out how much Hoovering is needed based on the size of the room. They also learn and remember the most efficient routes around the room.
- 2. Twitter:** Uses AI to identify hate speech, fake news and illegal content. In one six-month period, the platform removed nearly 300,000 terrorist accounts that had been identified by AI.
- 3. Likewise, Instagram** is using AI to fight cyberbullying and take down offensive comments.
- 4. Betterment robo-advisors:** There are lots of fintech companies offering robo-advice these days, but Betterment are the biggest and one of the pioneers in the field. Robo-advisors are online financial advisors that use AI to deliver personalised financial advice in an accessible, cost-effective way. This financial revolution promises to open up financial planning to the masses.
- 5. Nest smart thermostats:** If you've ever railed at the cost of your energy bills, this product might be for you. The smart thermostat monitors activity in your home and begins to understand the occupants' behaviour patterns. Then, based on what it knows about how you and your loved ones use the home, it dynamically adjusts the temperature to keep the home comfortable, without wasting energy.

Abhishek Choudhary

B.Com. 3rd Year

मझीण क्षेत्र में विकास की संभावनाएं

मझीण हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में नादौन से 12 कि. की दूरी पर स्थित है। मझीण क्षेत्र में प्रकृति सौंदर्य देखने को मिलता है। मझीण व इसके आस पास के क्षेत्रों में ज्यादातर लोगों का आय स्तर कम है, जिसका मुख्य कारण सुविधा और जागरूकता में कमी है। मझीण क्षेत्र को चंगर क्षेत्र भी कहते हैं। मझीण व इसके आस पास के क्षेत्रों में अभी भी तकनीकी विकास की कमी है। मझीण क्षेत्र में कृषि व अन्य कृषि आधारित उत्पादों के वातावरणीय स्थितियां काफी अनुकूल हैं। यहां प्रदूषण का स्तर काफी कम है। मझीण क्षेत्र में दो प्रमुख शैक्षणिक संस्थान गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल मझीण और गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज मझीण ने इस क्षेत्र की शिक्षा स्तर को बढ़ाने में काफी सहायता प्रदान की है। शिक्षा, उद्यमिता, भौतिक बुनियादी और सामाजिक बुनियादी ढांचा सभी ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मझीण क्षेत्र में जल और सिंचाई संबंधित समस्याओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों की काफी मात्रा है, लेकिन उनका कुशलता पूर्वक उपयोग करने का अभाव आज भी एक मुख्य चुनौती है।

मझीण क्षेत्र के पिछड़े होने के मुख्य कारण :- मझीण क्षेत्र में शिक्षा का स्तर काफी कम है जिसके कारण उन्हें लाभ प्राप्त नहीं हो पाते हैं ' लोगो में जागरूकता में कमी के कारण सरकारी नीतियों व योजनाओं का खास लाभ प्राप्त नहीं होता है, इसमें कुछ हद तक लोगों के शिक्षा स्तर का भी प्रभाव पड़ता है।

एक आधुनिक समाज में प्रत्येक नागरिक को उत्तरजीविता के लिए अधोसंरचना सुविधा की आवश्यकता होती है। मझीण क्षेत्र एक पहाड़ी क्षेत्र है जिसमें अधोसंरचना का अभाव अभी भी है। जो क्षेत्र उन्नति पर प्रभाव डालता है।

मझीण क्षेत्र में लोग अभी भी कृषि से संबंधित कार्यों के लिए पुरानी कृषि प्रणाली का उपयोग करते हैं, और उचित फल प्राप्त न होने के कारण कृषि कार्यों का त्याग कर रहे हैं।

मझीण क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा ज्यादा है लेकिन सुविधा अभाव व ज्ञान और कौशल की कमी के कारण इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कुशलतापूर्वक नहीं किया जा रहा है। उचित जानकारी न होने के कारण लोगो को अनेक अवसरों का लाभ प्राप्त नहीं होता है जिससे आय स्तर वृद्धि दर में गिरावट आई है।

मझीण क्षेत्र के विकास के लिए मुख्य सुझाव :- अधोसंरचना विकास - इन्फ्रस्ट्रक्चर को हिन्दी में बुनियादी ढांचा कहते हैं। बुनियादी ढांचे का होना किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए अत्यावश्यक है। अधोसंरचना को गति मिलने से स्वास्थ्य, शिक्षा और बैंकिंग सेवाओं आदि का दायरा बढ़ा है। बुनियादी ढांचे के अंतर्गत पानी, बिजली, सड़कें, पुल, यातायात प्रणाली, संचार और कूड़े/कचरे का निस्तारण आदि आते हैं। मझीण क्षेत्र के विकास के लिए यहां उपरोक्त सभी का होना आवश्यक हो जाता है जिससे जीवन स्तर में वृद्धि सहायता प्रदान होती है।

पर्यटक स्थल के रूप में विकास - मझीण क्षेत्र को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है क्योंकि यहां पहाड़ियों के होने के कारण पैराग्लाइडिंग और टिम्बर टरेल रोपवे, पर्यटक स्थल बन सकता है जिसके लिए कुछ महत्वपूर्ण सुविधाओं का होना जरूरी है।

प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण व कुशल उपयोग - मझीण क्षेत्र में प्रकृति सौंदर्य देखने को मिलता है मझीण क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों में इसकी वातावरणीय स्थितियां भी आती है। इस क्षेत्र में फलों व सब्जियों के लिए उत्तम वातावरण है और यदि जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यों पर बल दिया जाए तो मझीण क्षेत्र नए उत्पादन क्षेत्र के रूप में उभर सकता है, जो रोजगार उपलब्धता का मुख्य कारण बन सकता है।

वैज्ञानिक कृषि का उपयोग - वैज्ञानिक कृषि से अभिप्राय खेती-फसलों तथा पशुओं पर अध्ययन करने से हैं तथा उनकी मात्रा तथा गुणवत्ता में सुधार के लिए मार्ग तैयार करने से हैं। वे कम श्रम के साथ फसलों की मात्रा और गुणवत्ता में सुधार, कीट तथा खरपतवारों पर सुरक्षित और प्रभावी तरीके से नियंत्रण और मृदा तथा जल संरक्षण में सुधार के उपायों के सुझाव देते हैं। मझीण क्षेत्र में लोग अभी भी कृषि क्षेत्र में पुरानी तकनीकों का उपयोग करते हैं जिससे कृषि आय काफी कम है लेकिन यदि लोगो को वैज्ञानिक ढंग से कृषि करने के बारे में बताया जाए तो लोग कृषि कार्यों से अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं।

तकनीकी विकास - मझीण क्षेत्र में तकनीकी विकास की काफी कमी है। प्रौद्योगिकी विकास का तात्पर्य अनुसंधान, प्रयोग और नावाचार के माध्यम से पूरी तरह से नई प्रौद्योगिकियों को बनाने की व्यवस्थित प्रक्रिया से है। मझीण क्षेत्र में तकनीकी कौशल विकास योजनाएं का लाभ प्राप्त कर अपने क्षेत्र में नवाचार से विकास की ओर ले जा सकता हैं। तकनीकी कौशल विकास से जीवन स्तर में सुधार होता है।

दिव्यांशु शर्मा
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

जीएसटी और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव

जीएसटी भारत के इतिहास में सबसे बड़े कर सुधारों में से एक है। 01 जुलाई 2017 को देशभर में जीएसटी लागू हो चुका है जीएसटी का पूरा नाम गुड्स एंड सर्विस टैक्स है (GST) इसका हिंदी में अर्थ वस्तु एवं सेवा कर होता है। जीएसटी के तीन प्रकार हैं केंद्रीय जीएसटी (CGST) राज्य जीएसटी (SGST) और एकीकृत जीएसटी (IGST)। इसके लागू होते ही सर्विस टैक्स (Service tax) सेल्स टैक्स (sales tax) वैंट VAT एक्साइज ड्यूटी जैसे अप्रत्यक्ष कर से लोगों को मुक्ति मिल चुकी है। GST लागू होने पर सबसे ज्यादा फायदा आम आदमी को हुआ है, क्योंकि अब चीजें पूरे देश में एक रेट पर मिल रही हैं। जीएसटी आने के बाद टैक्स ढांचा एकदम समान हो गया है और पूरी तरह पारदर्शी है, जिससे टैक्स विवाद में कमी आई है। भारत में लगभग सभी उत्पाद और सेवाएं जीएसटी के अधीन हैं, जो चार दरों में विभाजित है 5%, 12%, 18%, 28%। जीएसटी के फायदे और नुकसान हैं जो उपभोक्ताओं और विक्रेताओं दोनों को प्रभावित करते हैं। भारत में जीएसटी लागू करने का इरादा व्यापार के लिए अनुपालन को आसान बनाना था। कोई भी वस्तु निर्माण से लेकर अंतिम उपभोग तक कई चरणों के माध्यम से गुजरती है। पहला चरण है कच्चे माल को खरीदना, दूसरा चरण उत्पादन या निर्माण होता है। फिर सामगियों के भंडारण या वेयरहाउस में डालने की व्यवस्था है। इसके बाद उत्पाद रिटेलर या फुटकर विक्रेता के पास आता है। और अंतिम चरण में रिटेलर आपको या अंतिम उपभोक्ता को अंतिम माल बेचता है। सितंबर, 2023 महीने का राजस्व पिछले वर्ष के इसी महीने के जीएसटी राजस्व से 10% अधिक है। महीने के दौरान घरेलू लेनदेन से राजस्व पिछले वर्ष के इसी महीने के दौरान इन स्रोतों से प्राप्त राजस्व से 14% अधिक है। यह चौथी बार है कि वित्त वर्ष 2023-24 में सकल जीएसटी संग्रह 1.60 लाख करोड़ के आंकड़े को पार कर गया है। भारत में जीएसटी लागू करने का इरादा व्यापार को आसान बनाना था।

जीएसटी के प्रकार Types of GST :- खरीददार और निर्माता दोनों जीएसटी (GST) के अधीन हैं। जीएसटी लागू होते ही सर्विस टैक्स, सेल्स टैक्स, वैंट, एक्साइज ड्यूटी जैसे अप्रत्यक्ष कर से लोगों को मुक्ति मिल चुकी है और उनकी जगह जीएसटी लग चुका है। जीएसटी के तीन प्रकार हैं जो निम्नलिखित हैं।

सेंटल गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (CGST) जहां केन्द्र सरकार द्वारा राजस्व एकत्र किया जाएगा। केन्द्र सरकार वस्तुओं और सेवाओं की किसी राज्य के भीतर बिक्री पर सीजीएसटी वसूल करती है। एक राज्य में खरीदने के बाद उसी राज्य में बेची जाने वाली वस्तु या सेवा पर सीजीएसटी लगता है।

राज्य वस्तु और सेवा कर (SGST) राज्य में बिक्री के लिए राज्य सरकारों द्वारा राजस्व एकत्र किया जाएगा। यह कर राज्य सरकार द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की किसी राज्य के भीतर आपूर्ति पर लगाया जाता है। जब किसी वस्तु या सेवा की आपूर्ति एक राज्य के अंदर होती है तो उस पर एसजीएसटी (SGST) लगता है।

एकीकृत माल और सेवा कर (IGST) कर दो राज्यों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान प्रदान पर लगाया जाता है। जब किसी वस्तु या सेवा की आपूर्ति एक राज्य से दूसरे राज्य में होती है, तो उस पर आईजीएसटी लगता है। आपूर्ति से मतलब वस्तु या सेवा की बिक्री, ट्रांसफर, एक्सचेंज आदि से है।

अर्थव्यवस्था पर जीएसटी का प्रभाव :- जीएसटी से भारत में निर्मित वस्तुओं और सेवाओं के प्रति राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता बढ़ती हुई दिख रही है। जीएसटी का उद्देश्य आम कर दरों और प्रक्रियाओं के साथ भारत को एक सामान्य बाजार बनाना है और इसकी आर्थिक बाधाओं को दूर करना है। भारत पर जीएसटी के प्रभाव को साकारात्मक माना जा सकता है। जीएसटी पूरे देश के लिए लाभदायक है। यह उद्योग, उपभोक्ता और सरकार के सभी हितधारकों को लाभ पहुंचा रही है। जीएसटी (GST) का उद्देश्य आम कर दरों और प्रक्रियाओं के साथ भारत को एक सामान्य बाजार बनाना है और इसकी आर्थिक बाधाओं को दूर करना है जीएसटी से मेक इन इंडिया पहल को और बढ़ावा मिला है।

वरुण

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

Divyanka

2023-24

PAHARI SECTION

Staff Editor
Prof. Mukta Mani



Student Editor
Munish Rana



Women Empowerment and Sustainability: An Integrated Concept

Women empowerment and sustainability are interconnected concepts that are essential for achieving holistic development and addressing global challenges. Women's economic empowerment is a key aspect of sustainability. When women have access to economic resources, they can contribute to sustainable development by participating in income-generating activities, starting businesses, and investing in their communities. Empowering women through education and healthcare improves their well-being and that of their families. Educated and healthy women are better equipped to make informed decisions about their lives, their families, and the other people around them. Women's participation in decision-making processes at all levels, from local to global, is crucial for achieving sustainable development. When women have equal representation in politics and governance, they can advocate for policies and initiatives that promote sustainability, such as environmental protection, social welfare programs, and inclusive economic growth. Women play a significant role in natural resource management, particularly in rural areas. When women are involved in sustainable agriculture, water management, and forest conservation, they contribute to the preservation of ecosystems and the sustainable use of resources for future generations. Empowering women enhances community resilience and adaptation to environmental and socio-economic changes. Women often bear the brunt of climate change impacts and other crises but empowering them with knowledge, skills, and resources can help communities' better cope with and recover from disasters. Women, particularly those from marginalized communities, often face intersecting vulnerabilities related to gender, race, ethnicity, class, and other factors. Addressing these intersecting vulnerabilities through inclusive policies and programs is essential for advancing both women's empowerment and sustainability. Empowering women to access and utilize technology can accelerate progress towards sustainability. Women entrepreneurs and innovators are driving positive change through initiatives focused on renewable energy, clean technology, sustainable agriculture, and social entrepreneurship. In conclusion, women empowerment and sustainability are mutually reinforcing goals that can contribute to creating a more equitable, resilient, and environmentally sustainable world. Efforts to promote women's empowerment should be integrated into broader sustainability initiatives, recognizing the vital role that women play in driving positive social, economic, and environmental change.

Prof. Mukta Mani
Department of History
GDC Majheen

टपरु मिली जुली करी बसाणे चाहिदे

मना न मना तोहार मनाणे चाहिदे,
 चायें चायें रिस्ते भी नभाणे चाहिदे !
 किहलेया रहणे ते सौ ब्याधां हजार दुख,
 टपरु मिली जुली करी बसाणे चाहिदे ।
 जेहड़े दिलें बैठी दुखां दा सबब बणदे,
 सैह बोल-कुबोल मने ते मटाणे चाहिदे ।
 जुआना जो भी इक दिन बुढ़ापा ओणा है,
 बैठी बुजुर्गा नें दो पल बिताणे चाहिदे ।
 बेईमानी दी कमाई सदा नीं सरदी,
 पैसे माणदारिया ने कमाणे चाहिदे ।
 कामयाबी दा नाप अगली पीढ़ी होंदी,
 बच्चे अप्पु ते बेहतर बनाणे चाहिदे ।
 रोज़ रोज़ अरो कुत्थू हन मिलदे सबना जो,
 मौके खुशियां दे मिलीं नें भुनाणे चाहिदे ।
 जीणे दा हक है सबना जो बरोबर भगता,
 ऊच-नीच दे बीड बने हटाणे चाहिदे ।

शिपाली

बी.ए. तृतीय वर्ष

सैह कुण थी

जेहड़ी बड़ी प्यारी थी सैह कुण थी,
 जेहड़ी हमेशा मेरे भल रैहंदी सैह कुण थी,
 किताबा खेलदे ही जेड़ी याद औंदी, सैह कुण थी,
 पियारे-पियारे सुपणे दिखांदी, सैह कुण थी,
 क्लासा ता मिंजी बड़ी याद औंदी, सैह कुण थी,
 पूरा साल जिने मिन्जो पढ़ना नी दिता, सैह कुण थी,
 दोस्तो सैह थी मेरी नींदर ।

प्रियंका

बी.ए. द्वितीय वर्ष

कांगड़ा असा दा बड़ा महान

चाचू बोले सुण मेरी लाजौ,
 कांगड़ा असां दा बड़ा महान
 भोले भोले लोक एथु बसदे, मेहनत करीके रोटी खांदे ।
 कांगड़ा असां दा बड़ा महान,
 नदियां नालू झर-झर बगन कनां च पांदे मिट्टी तान,
 रुख बुटियां दी कमी नी कोई खड़ोतयो रैंदे सीना तान,
 कांगड़ा असां दा बड़ा महान ।
 कांगड़ा तिथु तोहारा दीया तां खूब होदियां रोज मौजा
 लोहड़ियां दियाली, तहाडी खिचड़ी पकांदे,
 ऐथू बणयो बड़े बढिया मकान
 कांगड़ा असां दा बड़ा महान

नेहा

बी.ए. तृतीय वर्ष

आसारी बोली पहाड़ी री पुकार

एड़ी क्या गुस्ताखी क्या किती मै बुराई
 पढदे-लिखदे ता थे नी बोलने गलाणे ते भी गवाई ।
 एड़ी क्या खता होई मेरे ते ओ,
 जो मेरे अपणेया ही किती मैं पराई ।
 क्या सोचदे कुण है क्या ग्लान्दे ने कुथी ते आई ।
 मैं तुसारी पहाड़ी, जो सारेया दिति भुलाई ।
 कधे हिंदी बोली कधे पंजाबी,
 फिरी अंग्रेजी री किती बड़ाई ज्यादा पढ़ा लिखा
 लगने खातर मेरे ते मुहं दित्या फिराई ।
 बोली भाषा च तबदीली ता हुंदी आई
 पर आसे अपणी बोली रा अस्तित्व दित्या मुकाई ।
 बचेया जो मों-बापुए हिंदी ता अंग्रेजी ही सिखाई
 ए ता पिछड़ी पुराणी ही ए सोच कीथी ते आई ।
 भई एड़ा भी क्या होया ए ध्याड़ा दित्या दिखाई
 पहाड़ी री संस्कृति री पहचान ही दित्ती मुकाई
 भोटी, किन्नौरी, कांगड़ी, चब्याली, मुहासवी, सिरमौरी
 कने मंडयाली इना सारियां रा नाव हे दित्या मुकाई ।
 हर भाषा बोली सीखा पढ़ा ते बोला पर
 अपणी मत देंदे गवाई
 हर बोली री अपणी अहमियत होंदी
 मेरे बगैर तुसा रा भी क्या वजूद रहंगा ओ भाई ।

ज्योति राणा

बी.ए. तृतीय वर्ष

नया जमाना

अजकले दा समय कितना बदली गया,
 हर चीज आजकला ऑनलाइन ओई गई ।
 रिश्ते भी अजकल ऑनलाइन लई पे ओणा
 इस ऑनलाइन जमाने बिच ।
 पाड़ी लोक अपनीया पाड़िया बोलियां जो भी पुलि गये ।
 अजकले दा वक्त कितना बदली गया ।
 हाड़े गरां भी बदली गे ।
 कने गरोंए दा रैण-सैण भी बदली गया ।
 हर चीज अजकल ऑनलाइन ओई गई ।
 अपनेयां सयाणेयां दी सेवा कर
 जमाना नोआ हो चाहे पुराणा हो

प्रिया

बी.ए. तृतीय वर्ष

सारा गूगल दा कमाल

आज दा बच्चा भी बड़ा बेमिसाल
सारा गूगल दा कमाल
लिखना भी नी पोन्दा हूँ कोई भी सवाल
सारा गूगल दा कमाल
बच्चा बड़ा बेमिसाल
दिमाग च असर इन्हें पाया हुण न कर
पाया इसदा इस्तेमाल
सारा कुछ गूगल पर ही मिलदा से जे
इस विच फसी गया हूँ नी निकली सकदा
गूगल भाई दा ता येही जाल
आज दा बच्चा भी बड़ा बेमिसाल
सारा गूगल दा कमाल

विवेक कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पहाड़ी कविता

मिली-जुली रैहणा चाहिए ।
टपरु मिली जुली करी बसाणे चाहिदे ।
मन्ना न मन्ना त्योहार मनाणे चाहिदे ।
चायें चायें रिस्ते भी नभाणे चाहिदे !
किहलेया रहणे ते सौ ब्याधां हजार दुख,
टपरु मिली जुली करी बसाणे चाहिदे ।
जेहड़े दिलें बैठी दुखां दा सबब बणदे,
सैह बोल-कुबोल मने ते मटाणे चाहिदे ।
जुआना जो भी इक दिन बुढ़ापा ओणा है,
बैठी बुजुर्गा नें दो पल बिताणे चाहिदे ।
बेईमानी दी कमाई सदा नीं सरदी,
पैसे माणदारिया ने कमाणे चाहिदे ।
कामयाबी दा नाप अगली पीढ़ी होंदी,
बच्चे अप्पु ते बेहतर बनाणे चाहिदे ।

विशाखा
बी.ए. प्रथम वर्ष

पहाड़ा दा जीणा

असां बसी जाणा झिला दे पार
ऐथी हुण जिऊ नी लगदा
बाहरे लोके कालोनी बसाई ती
शहर वाली आफत असां जो पाई ती
छलिया दी रोटियां ते सरुआ दा साग वे
देसी खाना असां जो नी फबदा
माल पशु ऐथी हुण पालि नी सकदे
दुध घीऊ लोग ऐथी दूरा ते तकदे
ऐथी भूली जाणे अपने रिवाज वी
अपने खेत्रां रा फल नही मिली सकदा ।
धूल, धुआं कने लोका दी भीड वे
देखी कने मेरे धुआ सिर च पीड़ वे
ऐथी होई जाणा जीऊणा बर्बाद वे
टेमा रा खाना ऐथी नही पकदा ॥

मुनीष राणा
बी.ए. तृतीय वर्ष

कुछ खरिया गल्ला

गल मुकदी गलाई के, रोटी मुकदी खाई के
जमीन रजदी बाई के, कुड़ी सजदी ब्याही के
मंजिल मिलदी जाई के, समझ औंदी समझाई के
आराम मिजलदा सोई के, भड़ास मिटदी रोई के
चुल्ह सजदी जलाई के, रजाई सजदी भराई के
कणक भिऊंदी सुकाई के, भेद खुलदे प्याई के
ठोलक लैणी बजाई के, बर्तन लैणे ठण्काई के
भैस लैणी सामणे दुआई के, बूट लैणे पैरा पाई के
गहणा बणदा चंडी के, विद्या बदधी बण्डी के
कसरत हुदी नच्ची के, खून बदधा हस्सी के
शरीक हंसदे लड़ाई के, झगड़े मुकदे मनाई के ।

विवेक कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

चुटकुले

- * इक गल दिखी जाये ता कि दुनिया च कोई भी इंसान शाकाहारी नी है । सोचा जरा से कियां ?
क्योंकि दिमाग खाने दी आदत सा सारेयां जो होंदी है ।
- * इकी शहरे दी कुड़िया दा ब्याह ग्राये च होई जांदा, कुड़िया दी सस बोल्दी कि जा मही जो घा पाई आ, कुड़ी जांदी कनै
मही दे मुहें च झाग दिखी कने वापिस आई जांदी सस बोल्दी क्या होइया लाडिये मही जो घा नी पाया कुड़ी बोल्दी सासु
जी मही ता अजे पतांजलि टूथपेस्ट करा दी है तां मैं घा नी पया ।
- * तुसां कदी सोच्या? हॉस्पिटल च मरीजे जो ऑपरेशन ते पहले बेहोश कजो करदे ? अगर बेहोश नी किता ता कने मरीज
टापरेशन करना सीखी गया ता डाक्टरा दा ता धंधा चौपट होई जाणा ।

काजल
बी.ए. प्रथम वर्ष

सैर हिमाचल दी

मण्डी दी शिवरात्री कनै कुल्लू दा दशहरा,
दिन रात रैदा पुलसा दा पैहरा ।
शिमले दी चढ़ाई कनै जाखु दा मंदिर,
दर्शन करने वाले जो तंग करदे बंदर
चम्बे दा चौगान कने भिंजरा दे मेले,
देखी-देखी नी थकदे देई देदे दौड़ ।
स्पीतिया दी ठण्ड कनै किन्नौर दी घाटी,
बिलासपुरे दी छिंज ता सिरमौर दी नाटी
हमीरपुर दे स्कूल कने ऊने दी मशीना
पाणी तंगी चाहे हो वरसाती दा महीना
सोलना दी खेती कने सब्जी ढेर
बस हुण होई बई हिमाचले दी सैर ।

प्रियंका
बी.ए. तृतीय वर्ष

साड़ा स्माइलिंग ग्रुप

दोस्तो साहडे ग्रुपे दी क्या गल गलाणी म
तुआड़ी अपने ग्रुपे कने जान-पछैण करानी
तां बड़े ध्याने ने सुणनयो उसदी कहाणी
चार कुड़ियां दा ए ग्रुप पर धमाल
इनां दसां बराबर पाणी
सब ते पहले कंचन राणी
हमेशा ही बक-बक करने दी करदी तैयारी
लोको तिसा दी शक्ल विपाशा कने मिलाणी
पर सै वी विपासा दे घट नीं सच्ची
गल्ल जेड़ी गलाणी
दूजे नबरे पर अंजली राणी
तिन्ने जे गल गलाणी पूरी ही गलाणी
कनै चौबी घण्टे दन्द बार जे रुठे तां कुनी मनाणी
तीजे नबरे पर रितू राणी इकी जगह बैठना
कने चुप रेणा तिसा दी निशाणी ।
चौथे नबरे पर ज्योति राणी जालू हसदी
ता कनां देया परदया दिंदी फाड़ी
सै करदी अपनी मननाणी ।
ऐ है साडे स्माइलिंग ग्रुपे दी कहानी

शोभना
बी.ए. तृतीय वर्ष

असां दा प्यारा मझीणे दा कॉलेज

असां दा प्यारा मझीणे दा कॉलेज
सांजो लगदा बड़ा प्यारा,
जिन्हा जे अपणा घर लगदा सबना जो प्यारा ।
साड़े कॉलेजे ते बाहर सड़क हैं जांदी
सर्पे साई इतने फेरे पांदी गेटे अंदर जालू ओन्दे
कॉलेजे अगे शीश नवांदे
बजदी जालू घंटी असां सारे अपणियां क्लासा च जांदे
कॉलेजे अपना बड़ा ही सुंदर इयां लगगे
जियां विद्या दा मंदिर
ना किसी कनै कोई भेदभाव सारे
बच्चे कठठे पढ़दे इसदे अंदर
हुण मैं मास्टरा दीयां तारीफ करां
रोज असां जो नइया गलला सखांदे
मझीणी दा कॉलेज सबना ते न्यारा
ताही तां सांजो लगदा बड़ा ही प्यारा
इस कॉलेजे दी करी ना सकदा कोई रीस
ताहीतां कॉलेज लगदा हंसा जो प्यारा
जिन्हा जे अपणा घर लगदा सबना जो प्यारा
टसां जो प्यारा मझीणी दा कॉलेज सांजो लगदा बड़ा प्यारा
।

प्रियंका
बी.ए. तृतीय वर्ष

घरे घरे दी गल्ला

पाइया पक्किया कोठियां टाइते धर पुराने,
बड़िया मुश्कला मिलदे हुण घरा बिच सयाणे
जिंदे दी नी करनी कदर मोया दी बनाणी बरसी
सुधरी जायों लोको किता मरना तरसी तरसी
संस्कार कुतु ते मिलणे जे सयाणे टके बोणा नी
कुछ लोग इना फणसोंदे जिना इना कदे बूढेया होणा नी ।
मोया जो रोन जोरे जोरे जिंदे दा नी पुछणा हाल
नयाणेया जेड़ा दिखणा सेई सिखणा फिरी
क्या तुआड़ा ख्याल ।

कामिनी
बी.ए. तृतीय वर्ष



Opportunities in Banking



Kalash Yatra Aazadi ka
Amrit Mahotsav



Hamari Betiyan - Hamari Shan



Stay Healthy, Stay Safe



Hindi Mahotsav



Awareness Lecure on Cyber Crime



Our Stars Ready for Participation in
HPU Youth Festival Group III



Let us clean the world around us



Say no to Drugs Interaction with
School Students



Let us Participate in Games
(Annual Athletic Meet 2023)



Students ready to participate in
HPU cross country (GC Jawalaji)



Poster Making Competition
(Road Safety Club)



Mehandi Competition
Adding colours to life (Rasrang)



Rangoli giving wings to our
imagination (Rasrung)



NSS 7 Days Special Camp



A Rare Combination of Brain and Beauty (Rasrang)



Feel Proud to Be a Himachali (Rasrang)



Let us Spread Awareness Through Nukkad (Rasrang)



Music is Healing



Our Shining Stars (Rasrung)



Music is the Soul of Life

Email: principalgdcmajheen@gmail.com
Ph.No.:01970-278533,278534